सत्यापन क्रमांक : RAJHIN/2015/60530

ओ३म्

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश

हिन्दी मासिक

वर्ष : ४ अंक : ४३ १ जून २०१८ जोधपुर (राज.) पृ.:३६ मूल्य १५० ₹ वार्षिक

कार्यालय : महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर
जसवन्त कॉलेज के पास, रातानाड़ा, जोधपुर (राज.)

आर्य वीर दल जोधपुर का संभागीय शिक्षण शिविर

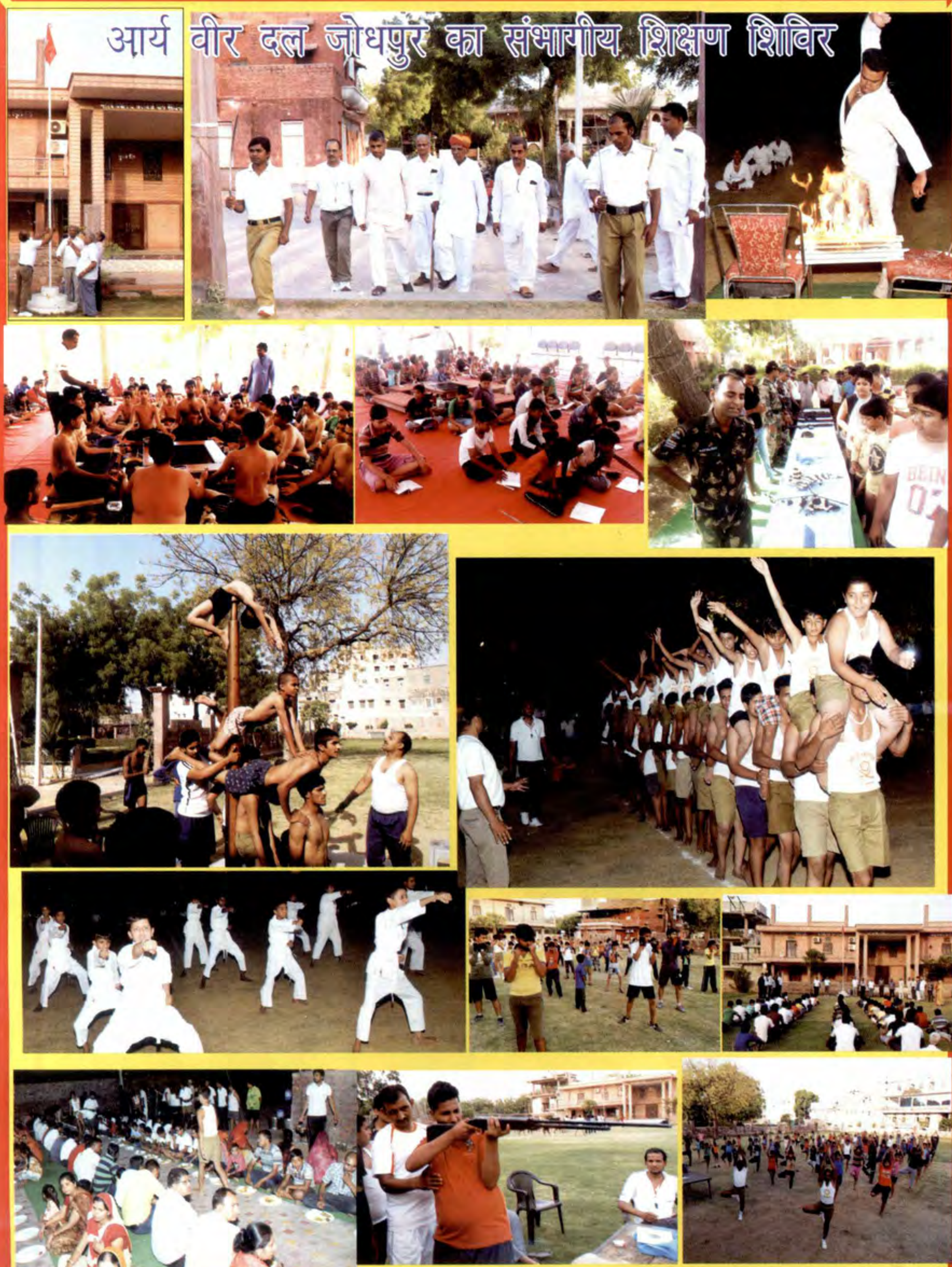

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् । -ऋग्वेद ९।६३।५

सबको श्रेष्ठ बनाओ

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश का मुख्य प्रयोजन

महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व, कृतित्व, व उनके द्वारा लिखित समस्त साहित्य तथा उनके सार्वभौमिक अद्वितीय कार्यों व सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार, स्थापना व व्यवहार में साकार करने के लिये कार्य करना ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर का मुखपत्र

वर्ष : ४ अंक : ४३

दयानन्दाब्द : -१९५

विक्रम संवत् : ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष २०७५

कलि संवत् ५११९

सृष्टि संवत् :१,९६,०८,५३,११९

मार्गदर्शक

पं. सत्यानन्दजी वेदवागीश,

सम्पादक मण्डल :

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर

डॉ. सुरेन्द्रकुमार, हरिद्वार

डॉ. वेदपालजी, मेरठ

पं. रामनारायण शास्त्री, सिरोही

आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा

कार्यवाहक सम्पादक :

कमल किशोर आर्य

Email: sampadakmdsprakash@gmail.com

9460649055

प्रकाशक :

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जसवन्त कॉलेज के पास, जोधपुर ३४२००१

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है । किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र जोधपुर ही होगा ।

Web.-www.dayanadsmritinyas.org.

वार्षिक शुल्क :१५० रुपये

आजीवन शुल्क : ११०० रुपये

(१५वर्ष)

महर्षि दयानन्द स्मृति प्रकाश

अनुक्रमणिका

	क्या	कहाँ
१.	सम्पादकीय....	४
२.	स्तुति व प्रार्थना...	८
३.	वेदवचन.........	९
४.	पैतृक मित्रता का निर्वाह करों.......	११
५.	दयानन्द कौन है-७.......	१२
६.	ऋषिगाथा....	१७
७.	आर्यसमाज का इतिहास.........	२२
८.	आर्य समाज मगरा पूंजला के चुनाव.....	२५
९.	स्वाध्याय........	२६
१०.	माताजी शोभाजी का आर्शीवाद........	२९
११.	सरस्वती वाक् की गौरव महिमा- २....	३०
१२.	आर्यवीर दल जोधपुर का संभागीय शिविर..	३२

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास

बैंक ऑफ बडौदा खाता संख्या-01360100028646

IFSC BARB0JODHPU

यह पांचवा अक्षर जीरो है

सम्पादकीय

दिग्भ्रमित विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका

विगत मास में भारत में राजनीति के संबंध में बहुत कुछ देखने का अवसर मिला। कर्नाटक में त्रिशंकु विधानसभा में सत्ता के लिए जो संघर्ष हुआ वह भारतीय राजनीति की पोल खोलने अर्थात राजनीति में पैसे के महत्व को रेखांकित करता है। सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास ने में महर्षि ने जो राजधर्म दिखलाया है या वैदिक वांग्मय में वेदों और मनुस्मृति या कौटिल्य अर्थशास्त्र में राजनीति का जो स्वरूप मिलता है, उसके अनुसार तो राजा या शासक प्रजा का सेवक होता है। वह इस बृहद जनसेवा के दायित्व का निर्वहन करता है, इसलिए प्रजा उसे ससम्मान अपना नियंता और ईश्वर का प्रतिनिधि मानती है।

किंतु भारतीय राजनीति आजं जिस अवस्था पर पहुंच चुकी है बड़ी शोचनीय है। कर्नाटक में भाजपा को पूर्ण विश्वास था कि विपक्ष के कुछ विधायक बिक जायेंगे और हम खरीद लेंगे, सत्ता हमारी आ जाएगी। राहुलजी एवं देवेगौड़ा जी या कुमार स्वामी को भी पूर्ण विश्वास था कि हमारे विधायक बिक सकते हैं।कांग्रेस के चुनाव प्रभारी श्री अशोक गहलोत राजनीति के पुराने खिलाड़ी है। कांग्रेस द्वारा उनके अनुभव का लाभ लेने के निर्णय के बाद कर्नाटक उन्हें प्रदत प्रथम बड़ी जिम्मेदारी थी, जिसे उन्होंने बखूबी निभाया, चुनावी रणनीति में भी एवं चुनाव के बाद आपदा प्रबंधक के रूप में भी। दोनों पार्टियों ने विधायकों की किलेबंदी की । येड्डीयुरप्पा को विधानसभा में शक्ति परीक्षण के बिना ही जाना पड़ा। कुमार स्वामी मुख्यमंत्री बने और झगड़ा शुरू हो गया वित्त मंत्रालय को लेकर। यह भी जाहिर करता है कि राजनीति वित्त केंद्रित है, राजनेता ज्यादा से ज्यादा वित्त का प्रबंधन, उपभोग और व्यय करना चाहते हैं। अब इस धन के द्वारा यह जनता का हित साधते हैं या अपना पार्टी का और स्वजनों का यह जनता को समझना है।

पश्चिम बंगाल के चुनाव में 17 लोगों की मौत हुई 100 से अधिक घायल हुए। हत्याओं एवं झगड़ों का सिलसिला जारी है और आश्चर्य होता है कि प्रत्येक मृतक को पक्ष और विपक्ष अपना कार्यकर्ता बताते हैं। यह कुत्सित राजनीति का परिणाम है।

इधर कश्मीर में भारत सरकार ने रमजान के पवित्र माह में एक पक्षीय युद्ध विराम की घोषणा की, जिस के दौरान पाकिस्तान ने युद्ध विराम को तोड़ते हुए भारतीय नागरिक क्षेत्रों पर हमले कर हजारों लोगों को पलायन को विवश कर दिया। स्थानीय आतंकियों ने सैन्य शिविरों पर हमले किए। उन लोगों के लिए रमजान पवित्र मास नहीं है। भारत सरकार द्वारा घोषित एक पक्षीय विराम को यह लोग अपनी रणनीति को सुढ़ करने मैं उपयोग कर रहे हैं। बार बार पाकिस्तान और कश्मीरी उग्रवादियों द्वारा धोखा खाने के बाद भी पता नहीं भारत सरकार किन लोगों को खुश करने के लिए युद्ध विराम कर रही है। जिन लोगों के कहने पर या जिन लोगों को खुश करने के लिए भारत सरकार ने युद्ध विराम लिया है, उन लोगों की सोच भारत के लिए गंभीर खतरा लेकर आने वाली है।

तमिलनाडु में तुत्तुकुड़ी स्थित स्टरलाइट कॉपर प्लांट को बंद करने हेतु आम जनता के आंदोलन में पुलिस की गोलियों से ग्यारह नागरिकों की मृत्यु हो गई। सरकार ने इसके बाद जन विस्फोट के भय से इस प्लांट को बंद कर दिया। प्रश्न यह है कि यदि प्लांट हानिकारक था तो ग्यारह लोगों की मौत के बाद क्यों बंद किया गया? इन ग्यारह लोगों की मौत के अलावा यह प्लांट और कितनी मृत्यु का जिम्मेवार है? यदि प्लांट नुकसानदायक था, तो इसे यहां लगाने की अनुमति देने वाले लोगों का क्या स्वार्थ था कि उन्होंने प्लांट यहॉ लगवाया, लगाए रहने के लिए सख्ती की; यहां तक कि ग्यारह लोगों की गोलियों से हत्या कर दी। प्रतिवर्ष सैकड़ों लोगों की हत्या इस प्लांट के प्रदूषण से होती रही, उस की जिम्मेवारी क्यों नहीं निर्धारित की जाती?

विधायिका एवं कार्यपालिका द्वारा जनहित, जन स्वास्थ्य व जनजीवन की उपेक्षा कर आर्थिक प्रतिष्ठान निर्बाध रुप से स्थापित करना इस बात को दर्शाता है कि इन दोनों ही संस्थाओं को जनहित की कोई परवाह नहीं हैं। क्योंकि ये प्रतिष्ठान उनके आर्थिक हित साधते हैं। वह आर्थिक हित जनता पर शासन करने वाले का होता है, जनता का नहीं होता, जनता और देश का तो दुर्भाग्य होता है। ऐसा लगता है कि सत्ता और प्रशासन जनता से परायों जैसा बर्ताव करता है। पता नहीं कब अपनों का शासन आएगा?

इधर जोधपुर के वकीलों ने हड़ताल की है। उदयपुर के जनप्रतिनिधियों एवं जनता की इस मांग पर कि राजस्थान हाईकोर्ट की एक सर्किट बेंच उदयपुर में लगाई जाए, जोधपुर के वकील कह रहे हैं कि आजादी के समय जोधपुर को राजस्थान की न्यायिक राजधानी बनाने के वायदे का यह दूसरी बार तोड़ना होगा। उच्च न्यायालय की मुख्य पीठ सहित राजस्थान उच्च न्यायालय को विभाजित कर जयपुर ले जाना प्रथम धोखा था।

आम जनता को एकीत हाईकोर्ट एकीकृत रहने या और नहीं बॅटने से क्या लाभ होगा मैं नहीं जानता! किंतु इतना जानता हूँ कि उदयपुर ही नहीं, हर जिला मुख्यालय पर राजस्थान उच्च न्यायालय की एक एक सर्किट बेंच ले जाने से एवं इसी तर्ज पर भारत के सर्वोच्च न्यायालय की एक एक सर्किट बेंच सभी राज्यों की राजधानी में स्थापित किए जाने से विभिन्न स्तरों पर न्याय का लाभ भारतवासियों को सुलभ होगा। मेरी सुविज्ञ पाठकों से, वकीलों से, प्रशासकों से, राजनेताओं से और सरकार से यह विनम्र अनुरोध है, विनम्र प्रार्थना है कि इस विषय में चिंतन करें और न्यायिक क्षेत्र में ही नहीं, शासन के हर क्षेत्र में अंग्रेजों द्वारा स्थापित केंद्रीत व्यवस्था का विकेंद्रीकरण कर जनता के लिए प्रशासन तक पहुॅच आसान बनाऍ।

जेल में मेल

युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती की अंतिम कर्मस्थली सौम्यता शान्ति, अपनायत और मेलजोल वाली सूर्यनगरी जोधपुर में अचानक अपराधों की बाढ़ सी आ गई है। ऐसा लगता है कि अपराधियों पर कोई रोक–टोक नहीं रह गई है। दुर्जन निर्भय है और सज्जन चिंताग्रस्त! व्यापारी की हत्या होती है, तार जेल से जुड़ते हैं, ठेठ पंजाब की जेल से! घरों पर फायरिंग होती है, तार जेल से जुड़ते हैं! हिस्ट्रीशीटर पर फायरिंग होती है, तार जेल से जुड़ते हैं। रंगदारी वसूली की

धमकियां मिलती है, तार जेल से जुड़ते हैं। जब सब तार जेल से जुड़ रहे हैं तो प्रशासन हरकत में आता है। जेल की तलाशी में आधुनिक मोबाइल और इन से भी अधिक संख्या में छुपाई हुई सिमें मिलती हैं। कई कैदियों पर और अनाम कैदियों पर भी केस दर्ज होते हैं; किंतु एक भी प्रहरी या जेल कर्मचारी किसी भी मामले में नामजद नहीं होता! अखबारों में स्टिंग ऑपरेशन छपते हैं कि जेल के बाहर कोई दुकानदार या थड़ी वाला या अन्य व्यक्ति आपसे पैसे लेकर जेल में सारी सुविधाएं मुहैया करवाता है। जेल से बाहर या दुकानों पर स्थित दलालों के मध्य हुए संवाद की स्क्रिप्ट अखबारों में छप चुकी है, जेलों में अपराधियों को फाइव स्टार सुविधाएं उपलब्ध कराने की खबरें भी छपती रहती है, किंतु आज दिन तक भी यह गतिविधियां बंद नहीं हुई। जनसाधारण में आम धारणा बन चुकी है कि जेल में तो साधारण कैदियों को सुरक्षित रहने के लिए भी कुछ न कुछ देना पड़ता है अन्यथा उसकी दिनचर्या भी मुहाल हो जाती है। विचार करें: –

१– **<u>क्या जेल में मोबाइल और सिम ले जाना संभव है</u>** ?: जेल मेनुअल में बाहरी व्यक्तियों के बंदियों से मिलने की एक पारदर्शी प्रक्रिया होती है। बिना चैकिंग के कोई बाहरी व्यक्ति या सामान जेल में जा नहीं सकता। जेलों के प्रहरी अपने काम में सुशिक्षित होते हैं। उन्हें तलाशी का पूर्ण अधिकार भी होता है। तुलना करें कि एक स्कूल या कॉलेज में परीक्षा होती है तो परीक्षार्थियों से मोबाइल ले लिए जाते हैं। कोई भी परीक्षार्थी मोबाइल ले जाने में सफल नहीं हो पाता। हॉ दूसरे सूक्ष्म आधुनिक उपकरण कभी ले भी जाता है तो पकड़े भी जाते हैं। यहॉ तक की शहर में मॉल या बड़े प्रतिष्ठानों में– जहॉ मॉल या प्रतिष्ठानों का बिक्री का स्वार्थ अधिक होता है, ग्राहक का कम; क्योंकि ग्राहक अन्य मॉल या बाजार से भी सामान ले सकता है– सामान्य प्रहरी भी मेटल डिटेक्टर की सहायता से ग्राहक के मोबाइल आदि चेक कर लेते हैं। साथ ही चालू कराके परीक्षण भी कर लेते हैं, ताकि कम से कम किसी बम का रिमोट आदि होने का प्राथमिक रूप से पता चल जाए। किंतु जेलों के प्रहरी तो बहुत ही अधिक प्रशिक्षित होते हैं। उन्हें जांच पड़ताल का पूर्ण अधिकार होता है, महिला प्रहरी भी होती हैं। अतः जेल में –जहॉ बंदी से बाहरी आगंतुक को मिलाने में जेलकर्मियों का कोई निहित स्वार्थ नहीं होता– मोबाइल ले जाना जेलकर्मियों की मिलीभगत के बिना असंभव है।

२– **<u>बंदियों एवं आगंतुकों की भेंट निरापदः</u>** बंदियों एवं आगंतुओं की बातचीत बहुत ही सुरक्षित स्थान पर होती है। उनके बीच किसी भी प्रकार का आदान प्रदान छुपता नहीं है। उनकी आपसी वार्ता का विषय क्या होगा– यह भी जेल नियमावली से नियंत्रित होता है। जैसे कि जेल की व्यवस्था के संबध में वार्ता निशिद्ध है। जेलकर्मी वार्ता का पर्यवेक्षण भी करते हैं। जेल नियमावली में तो यहॉ तक प्रावधान है कि बंदी और बाहरी आगंतुक के बीच फाइबर ग्लास लगाकर इण्टरकॉम से वार्ता करवायी जाए। ऐसे में बंदियों के पास बिना भ्रष्टाचार या सैंध के मोबाइल और सिमें पहॅुचना संभव नहीं है। यदि सैंध से यह होता है तो जेलों की सुरक्षा चिंतनीय है और भ्रष्टाचार का परिणाम है तो बाड़ खेत को खा रही है, कर्त्तव्यहीनता सिर चढ़ कर बोल रही है।

३– **जेलों में मोबाइल नेटवर्क जैमर:** सुरक्षा को ध्यान में रखकर जेलों में जैमर उपलब्ध कराए गए थे। इन जैमरों का असर जेल के आसपास के नागरिकों के मोबाइल पर भी होना प्रत्यक्ष अनुभव रहा है। किन्तु आश्चर्य होता है यह जानकर कि अपरीधी सोशियल मीडिया पर जेल से स्टेटस अपडेट कर रहा है।

४– **जेलों में मोबाइल जेलकर्मी बरामद क्यों नहीं करते?:** अब तक की खबरों में पुलिस ने जेल में छापे मारकर मोबाइल बरामद करने की जानकारी दी है। ऐसे समाचार ऑखों और मन को कितनी खुशी देंगे जब पढ़ेंगे कि जेलकर्मियों ने मोबाइल और सिम बरामद किए, बाहरी खाद्य वस्तुएँ बरामद की, कैदी के रिश्तेदार को कैदी के लिए छुपाकर अफीम ले जाते पकड़ा या जेलप्रशासन ने कैदी से मोबाइल छीनकर उसमें से जेल के बाहर से बात कर रहे व्यक्ति के नम्बर पुलिस को उपलब्ध कराए ताकि आगे पड़ताल हो सके। या जेल अधिकारियों ने जॉच कर अपराधी या संदिग्ध जेलकर्मियों को निलम्बित किया या उनके विरुद्ध अनुशासनिक कार्यवाही आरंभ की।

५– **जेलकर्मियों की अत्यधिक कमी:** राजस्थान में १२६ विभिन्न ग्रेड की जेलों में जेलकर्मियों के स्वीकृत ४४१७ पदों में से ४५ प्रतिशत पद अर्थात् १६८६ पद रिक्त है। किन्तु स्टाफ की कमी सुरक्षा में सैंध का बहाना नहीं हो सकती। अधिक असुरक्षित मुलाकातों के स्थान पर सुरक्षित मुलाकातें कम संख्या में तो हो सकती है। वैसे सरकारी कार्यालय में जरूरत से ज्यादा पद नयी बात नहीं है। कार्यालयों में कार्य संस्कृति है कहॉ? सामाजिक और जनहित के सरोकार कहॉ है?प्रत्येक सरकारी कर्मचारी से पूछना चाहिए कि जितना काम वह जितने वेतन में करता है, उसी काम का उसे ठेका दिया जाय तो वह इस काम को कराने के लिए किसी ठेकाकर्मी को कितना रुपये देगा। अपने कार्यलय में दो घण्टे भी टिककर काम नहीं करके अस्सी नब्बे हजार वेतन ले जाने वाला एक कर्मचारी अपने घर में चार घण्टे काम करने वाली बाई को तीन हजार भी बहुत मुश्किल से दे पाएगा। एक सैनिक साथियों के नहीं रहने पर भी दुश्मनों से अकेले भिड़ जाता है, तो एक सरकारी कर्मी कम से कम अपना निर्धारित कार्य तो ईमानदारी से करे।

६.**बॉस:** जेल के अधिष्ठाता जेल में प्रभावी हों, कैदी बॉस न बने। पैसा तो किसी भी सूरत में न जेल का बॉस बने, न विधायिका का, न कार्यपालिका का, न न्यायपालिका का और न ही किसी साधारण मनुष्य का। बॉस पैसा मनुष्य को मनुष्य नहीं रहने देता– यह सब जानते हैं। अब तो पैसे को बॉस नहीं, दास बनाने की सोच व कर्म आवश्यक है।

– कमल किशोर आर्य
सम्पादक

स्तुति विषयः

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।

सचस्वा नः स्वस्तये।।१५।। –यजुः०३।२४

<u>व्याख्यानः–</u>''अग्ने'' **(ब्रह्म ह्याग्निः इत्यादि शतपथादिप्रामाझयाद् ब्रह्मैवात्राग्निर्ग्राह्यः)** हे विज्ञानस्वरूपेश्वराग्ने! आप हमारे लिए ''**सूपायनः भव**'' सुख से प्राप्त, श्रेष्ठोपाय के प्रापक, अनुत्तम स्थान के दाता कृपा से सर्वदा हो तथा हमारे रक्षक भी आप ही हो। हे स्वस्तिदः परमात्मन्! ''**सवचस्व नः स्वस्तये**'' सब दुःखों का नाश करके हमारे लिए सुख का वर्त्तमान सदैव कराओ, जिससे हमारा वर्त्तमान श्रेष्ठ ही हो। ''**स नः पितेव सूनवे**'' जैसे करुणामय पिता अपने पुत्र को सुखी ही रखता है, वैसे आप हमको सदा सुखी रक्खो, क्योंकि जो हम लोग बुरे होंगे तो उन आपकी शोभा नहीं होगी, किञ्च सन्तानों को सुधारने से ही पिता की शोभा और बड़ाई होती है, अन्यथा नहीं।।१४।।

विभूरसि प्रवाहणो वरिसि हव्यवाहनः।

श्वात्रोऽसि प्रचेतास्तुथोऽसि विश्ववेदाः।।१६।। –यजु.:५।३१

व्याख्यान– हे व्यापकेश्वर! आप ''**विभूः असि**'' विभु हो, अर्थात् सर्वत्र प्रकाशित वैभवैश्वर्ययुक्त आप ही हो और कोई नहीं। विभु होके आप सब जगत् के ''**प्रवाहणः**'' प्रवाहण (स्व स्व-नियमपूर्वक चलाने वाले) तथा सबके निवार्हकारक भी आप हो। हे स्वप्रकाशक सर्वरसवाहकेश्वर! आप ''**वह्निः असि हव्यवाहनः**'' वह्नि। सब हव्य=उत्कृष्ट रसों के भेदक, आकर्षक तथा यथावत् स्थापक आप ही हो। हे आत्मन्।आप ''**श्वात्रः असि प्रचेताः**'' शीघ्र व्यापनशील हो तथा प्रकृष्ट ज्ञानस्वरूप, प्रकृष्ट ज्ञान के देने वाले हो। हे सर्ववित् ''**तुथः असि विश्ववेदः**'' आप तुथ और विश्ववेदा हो, ''**तुथो वै ब्रह्म**'' (यह शतपथ की श्रुति है) सब जगत में विद्यमान, प्राप्त और लाभ करानेवाले हो।।१६।।

–आर्याभिविनय

वेद-वचन

उद्यमी को सुख

प्राता रत्नं प्रातरित्वा दधाति तं चिकित्वान्प्रतिगृह्या नि धत्ते।

तेन प्रजां वर्धयमान आयू रायस्पोषेण सचते सुवीरः।। – ऋग्वेद १।१२५।१

पदार्थः–जो **(चिकित्वान्)** विशेष ज्ञानवान् **(प्रातरित्वा)** प्रातःकाल में जागने वाला **(सुवीरः)** सुन्दर वीर मनुष्य **(प्रातः रत्नम्)** प्रभात समय में रमण करने योग्य आनन्दमय पदार्थ को **(दधाति)** धारण करता और **(प्रतिगृह्य)** दे-लेकर फिर **(तम्)** उसको **(नि, धत्ते)** नित्य धारण वा **(तेन)** उस **(रायस्पोषेण)** धन की पुष्टि से **(प्रजाम्)** पुत्र-पौत्रादि सन्तान और **(आयुः)** आयु को **(वर्धयमानः)** विद्या और उत्तम शिक्षा से बढ़ाता हुआ **(सचते)** उसका सम्बन्ध करता है, वह निरन्तर सुखी होता है।

भावार्थः– जो आलस्य को छोड़ धर्म-सम्बन्धी व्यवहार से धन को पा, उसकी रक्षा, उसका स्वयं भोगकर दूसरों को भोग करा और दे-लेकर निरन्तर उत्तम यत्न करे, वह सब सुखों को प्राप्त होवें।

योगाभ्यास का फल

युक्तेन मनसा वयं देवस्य सवितुः सवे। स्वर्ग्याय शक्त्या।।– यजुर्वेद ११।२

पदार्थः– हे योग और तत्त्वविद्या के जानने की इच्छा करने हारे मनुष्यों! जैसे **(वयम्)** हम योगी लोग **(युक्तेन)** योगाभ्यासय किये **(मनसा)** विज्ञान और **(शक्त्या)** साामर्थ्य से **(देवस्य)** सबको चिताने तथा **(सवितुः)** समग्र संसार को उत्पन्न करने हारे ईश्वर के **(सवे)** जगत् रूप इस ऐश्वर्य में **(स्वर्ग्याय)** सुख-प्राप्ति के लिए प्रकाश को अधिकता से धारण करें, वैसे तुम लोग भी प्रकाश को धारण करो।

भावार्थः– इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमा अलङ्कार है। जो मनुष्य परमेश्वर की इस सृष्टि में समाहित हुए योगाभ्यास और तत्वविद्या को यथाशक्ति सेवन करें, उनमें सुन्दर आत्मज्ञान के प्रकाश से युक्त हुए योग और पदार्थविद्या का अभ्यास करें तो अवश्य सिद्धियों को प्राप्त हो जावें।

शत्रुओं को दमन

भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः वसु स्पार्हं तदा भर ।। – सामवेद १३४

पदार्थः– इन्द्र! परमात्मन्! राजन! वा देव-विशेष! **(विश्वा)** सब **(द्विषः)** द्वेषकर्त्री और (बाधः) बाधती हुई सेनाओं को **(अप , भिन्धि)** छिन्न-छिन्न करो, **(मृधः)** हिंसक संग्राम कारियों को (परि, **जहि)** सब ओर से मारिए, **(तत्) द्वेष और हिंसक शत्रुओं को नष्ट करने वाला** वह **(स्पार्हम्)** कामनायोग्य **(वसु) आंतरिक सामर्थ्य व बाह्य** धन **(आभर)** प्राप्त कराइए।

भावार्थः– राजा का धर्म है कि सज्जनों की रक्षा के लिए दुष्टों की सेनाओं का छेदन-भेदन, शत्रुओं का नाश और उनके धन को लेकर न्याय-कार्य में व्यय करे। इन्द्र वृष्टिकर्ता का काम है कि उमड़घुमड़ कर सामने आते मेघों की सेनाओं का छेदन-भेदन करे प्रजा के चाहे हुए उनके जलरूप धन को प्रजा को पहुँचाना। सर्वदुष्ट अधार्मिकों के दमन और श्रेष्ठों की रक्षार्थ परमेश्वर से भी प्रार्थना करनी चाहिए।

वेद-विद्यारहित राष्ट्र नष्ट

ब्रह्मगवी पच्यमाना यावत् साभि विजङ्गहे।

तेजो राष्ट्रस्य निर्हन्ति न वीरो जायते वृषा ।। – अथर्ववेद ५।१९।४

१. **पदार्थः– (सा)** वह **(ब्रह्मगवी)** ब्रह्मवाणी **(पच्यमाना)** पचाई-तपाई जाती हुई **(यावत्)** जब तक **(अभि)** चारों ओर **(विजङ्गहे)** फड़फड़ाती रहती है, वह **(राष्टस्य)** राज्य का **(तेजः)** तेज **(निर्हन्ति)** मिटा देती है, वहाँ **(वीरः)** कोई वीर पुरुष और **(वृषा)** ऐश्वर्यवान् **(न जायते)** नहीं उत्पन्न होता है।

भावार्थः– जहाँ वेद-विद्या का निरादर होता है, वह राज्य नष्ट हो जाता है और सब लोग निर्बल हो जाते हैं।

2. **पदार्थः–** (यावत्) जब तक (सा ब्रह्मगवी) वह ब्राह्मण की गौ (पच्यमाना) कष्टों की अग्नि में तपाई जाती हुई तड़पती रहती है, अर्थात् जब तक ब्राह्मण की वाणी का आदर नहीं होता, तब तक यह निरादृत ब्रह्मगवी (राष्ट्रस्य तेजः निर्हन्ति) राष्ट्र के तेज को नष्ट कर देती है। इस राष्ट्र में (वीरः वृषा न जयते) वीर धार्मिक पुरुषों का प्रादुर्भाव नहीं होता।

भावार्थः– ब्राह्मण की वाणी पर प्रतिबंध लगे रहने पर ज्ञान के प्रसार के अभाव में अधर्म फैलता है। राष्ट्र में तेजस्विता नहीं रहती और धार्मिक वीर पुरुषों का प्रादुर्भाव नहीं होता।

– चतुर्वेदशतकम्

पैतृक मित्रता का निर्वाह करो

मा नो अग्ने सख्या पित्र्याणि , प्र मर्षिष्ठा अभि विदुष्कविः सन्।

नभो न रूपं जरिमा मिनाति , पुरा तस्या अभिशस्तेरधीहि। ।ऋ १.७१.१०।।

ऋषि : पराशरः शाक्त्यः। देवता अग्निः। छन्दः त्रिष्टुप्।

(अग्ने) हे तेजोमय परमेश्वर ! **(विदुः)** सर्वज्ञ **(कविः)** कान्तदर्शी **(सन्)** होता हुआ [तू] **(नः)** हमारी **(पित्र्याणि)** पैतृक **(सख्या)** मित्रताओं को **(मा)** मत **(अभि प्र मर्षिष्ठाः)** भूल जा। **(नभः न)** आकाश के समान **(जरिमा)** बुढ़ापा **(रूपं)** रूप को **(मिनाति)** नष्ट कर रहा है। **(तस्याः)** उस **(अभिशस्तेः)** हिंसा से **(पुरा)** पहले **(अधीहि)** प्राप्त हो जा।

हे अग्निदेव ! हे तेजोमय प्रभु ! मेरे पिता में और तुममें जो अन्तरंग सख्य था, उसे क्या तुम भूल गये ? मेरे पिता 'शक्ति' थे, शक्ति के भण्डार थे। वे और तुम एक झूले में झूलते थे। तुम उनके थे, वे तुम्हारे थे। उन्हीं के पुत्र मेरे साथ तुम ऐसा व्यवहार कर रहे हो, जैसे तुम्हारी कोई पूर्व-परिचिति है ही नहीं । पैतृक मित्रता का तो निर्वाह करो। तुम 'विदु' हो, सर्वज्ञ हों, तुमसे न किसी के मन की कोई बात छिपी है, न विश्व के किसी कोने की बात छिपी है। तुम 'कवि' हो, कान्तदर्शी हो, भविष्य-द्रष्टा हो। भूत , वर्तमान , भविष्य कुछ भी तुमसे छिपा हुआ नहीं है। तो फिर मेरी पैतृक मैत्रियों को ही क्यों बिसारते हो ? 'शक्ति' के पुत्र को तुमने 'पराशर' क्यों बना रखा है, गुणों की दृष्टि से पराशीर्ण क्यों कर रखा है ? मुझे भी अपना अभिन्न सखा बनाकर शक्ति का पद प्राप्त करा दो।

मेरा सद्गुणों का रूप-सौन्दर्य, मेरे आत्मबल को रूप-सौन्दर्य, मेरे मनोबल का रूप-सौन्दर्य , मेरी सचाई का रूप-सौन्दर्य , मेरी तपस्या का रूप -सौन्दर्य , मेरे शरीर का रूप-सौन्दर्य सब नष्ट हुआ जा रहा है। शरीर का बुढ़ापा तो जब आना होगा तब आयेगा, पर मन के बुढ़ापे ने मुझे पहले ही आत्माधीन कर लिया है। उससे मैं जर्जर हुआ जा रहा हूँ। मैं स्वयं को निस्तेज, कान्तिहीन , हताश, रूग्ण अनुभव कर रहा हूँ। जैसे आकाश क्षण-क्षण में अपने रूप को नष्ट और परिवर्तित करता रहता है, वैसे ही मेरा आकर्षक रूप नष्ट होता जा रहा है। अब तो मेरी हिंसा हो जाने में, मेरी नैतिक मौत हो जाने मे , कुछ ही कसर बची है। हे अग्नि प्रभु ! आते क्यों नही ?

क्या तुम तब आओगे जब मेरा सर्वनाश ही हो चुकेगा ? हे देव ! आओ, 'अभिशस्ति' से पहले ही दौड़कर आ जाओ और मेरा उद्धार करो। मैं तुम्हारा सखित्व पाने के लिए आकुल हो रहा हूँ।

—वेदमञ्जरी

दयानंद कौन है–७

(सच्ची स्तुतिप्रार्थनोपासना के मार्गदर्शक)

–कमल किशोर "आर्य"

यह निभ्रान्त सत्य है कि सृष्टि के रचयिता, नियामक और संहर्ता परम पिता परमात्मा की ही स्तुति, प्रार्थना और उपासना की जानी चाहिए।

स्वयं को सृष्टि का सर्वाधिक बुद्धिमान प्राणी मानने वाले मानव, ने जल, थल और आकाश को मथ डाला है, वह सौर मण्डल से भी पार के आकाश को देख रहा है, उसने समुद्र के तल में भी सुरंगें बना ली है और परमाणुओं के भीतर भी झॉक रहा है।

एक ओर ऐसी सूक्ष्म और विराट् दृष्टि व सामर्थ्य का स्वामी मनुष्य है, जो अपनी शिक्षा, तकनीकी दक्षता और तर्कशक्ति से प्रकृति के नियमों का प्रयोग कर प्रकृति को जीतता हुआ यही समझ रहा है कि प्रकृति के नियमों का उद्घाटक अन्वेशणकर्ता मानव है और मानवीय प्रयत्नों के अलावा अन्य कोई भी प्रयत्न इन नियमों को साधता दृष्टिगोचर नहीं होता। विभिन्न मापकों, उपकरणों, मशीनों, तकनीकों, प्रेक्षकों आदि में उलझा यह वर्ग किसी भी उस वस्तु को नहीं मानता जो इनके भौतिक साधनों से प्रेक्षण में नहीं आती। यदि कुछ ऐसा प्रेक्षण में आ भी जाता है जो उनके मापकों और साधनों से परिभाषित नहीं हो सकता तो भौतिक साधनों से ही उसके अनुसंधान और अन्वेषण में लग जाते हैं। ये यही सोचते हैं कि प्रकृति के बारे में जितना जानोगे, इसके जितने नियमों को जानोगे, उतना ही प्रकृति को निर्भय होकर साध सकोगे। यही उनका जीवन है। न ये अपने भीतर झाँकते हैं और न ही नियमों से सुबद्ध इस अद्‌भुत् प्रकृति के किसी नियंता को देख पाते हैं।

दूसरी ओर मानवीय अस्तित्व की मूलभूत जरूरतों–रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, परिवार, दया इत्यादि से रहित, अल्पप्राप्त अथवा पूरा जीवन देकर इन्हें प्राप्त किए हुए मानव भी हैं जिन्हें अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के प्रयास के अलावा और कोई कार्य या विचार आता ही नहीं है। अपनी आवश्यकताओं या अभिलाषाओं की यथेच्छ पूर्ति तक इनके वश में नहीं। जो भी इन्हें अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति का भरोसा दिलाता है, या मार्ग दिखलाता है– वही उनका सर्वेसर्वा और मार्गदर्शक हो जाता है। इनके पास खोने को कुछ भी नहीं होता, अतः किसी कर्म विशेष से इनका वर्तमान या भावी जीवन समृद्ध और निर्बाध भोगयुक्त होने का आश्वासन इन्हें मिल जाए तो ये अपने कल्याणकर्ता मार्गदर्शक के लिए कुछ भी कर सकते हैं। मर सकते हैं, मार सकते हैं।

साधनों की उपलब्धता के अतिरिक्त स्वभाव और विचार आधारित एक मानवीय वर्गीकरण और किया जा सकता है। इस अनन्त ब्रह्माण्ड के सापेक्ष नगण्य शक्तिमान् प्राणी मनुष्यों में बहुत से निरभिमानी, सत्यान्वेशी, सत्यग्राही, सत्यमानी, सत्य प्रचारक, परोपकारी भी हुए हैं जिन्होनें पूर्वजों से प्राप्त ज्ञान के आलोक में इस अनन्त ब्रह्माण्ड के नियमों के पीछे किसी

नियामक सत्ता को माना है; उसके स्वरूप, गुण, कर्म, स्वभावादि को जानने का प्रयास बिना किसी पूर्वाग्रह के किया है। इस परम्परा में अनुवर्तियों ने पूर्ववर्तियों द्वारा सौंपी हुई थाती को यथाशक्ति परखा और कोई मिथ्या बात न पाने पर उनकी उन बातों को भी माना, जो भले ही वे सभी अनुभूत न कर पाए हों, किन्तु यथार्थ के धरातल पर उन्हें माने बिना बहुत सी समस्याएँ अनसुलझी रह जाती है। इस परम्परा से मेरा तात्पर्य श्रेयमार्ग या आर्ष परम्परा से है। अपनी बुद्धि, बल और धन का उपयोग जनसामान्य के अज्ञान, अभाव और अन्याय को दूर करने हेतु जो जितना उपाय करता है, अपने प्रयास की मात्रानुसार वह ऋषि या देवता या मानव होता है।

इनके विपरीत जन सामान्य के अज्ञान का लाभ उठाते हुए जो अपनी बुद्धि का उपयोग व्यर्थ के विवाद, कुतर्क व षड्यन्त्र रचने; बल का उपयोग परपीड़ा में और धन का उपयोग व्यसनों व पाखण्ड के व्यापार द्वारा स्वार्थसिद्धि में करता है, वह राक्षस होता है, अनार्य होता है। इनका मार्ग प्रेयमार्ग या वाम मार्ग होता है।

जन्म, जरा, विपत्ति, मरण व मानव के वश से परे किसी मानवोत्तर शक्ति द्वारा कारित कार्यों को देखकर मूढ़ से मूढ़ व्यक्ति को भी यह आभास तो होता ही है कि इस सृष्टि में अधिकांश कार्यों के पीछे कोई न कोई नियम कार्य कर रहा है। कहीं एक ही सूक्ष्म स्थान पर एकाधिक नियम कार्य करते, तो कभी सर्वत्र समान एक ही नियम कार्य करते भी दिखाई देता हैं। ये नियम इतने बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से बनाए गए हैं कि बड़े बड़ें वैज्ञानिकों और विशारदों के द्वारा भी समग्र और विशुद्ध रूप से परिभाषित नहीं किए जा सके हैं। उन परिभाषाओं में सतत संशोधन होते रहे हैं। लेकिन प्रकृति में वे निर्बाध रूप से लागू होते हैं।

बुद्धि और सामर्थ्य से जीवन में अर्जन, संचय, रक्षण और निर्वहन सरल होता है। अतः अल्पबुद्धि व अल्पशक्ति प्राणी समर्थ की सेवा में (उपासना मे) रहता है। अर्थात् संसार में उपासना सामर्थ्यवान् की होती है। मनुष्य का जीवनचक्र उसे सदा सामर्थ्यवान् नहीं रहने देता। शारीरिक सामर्थ्य ही उपासना का आधार हो तो जंगल न्याय लागू होगा, जहाँ जराप्राप्त सिंह को युवा सियार भी फाड़कर खा जाते हैं। इसलिए मानवीय सामर्थ्य से अगला उच्च स्थान चमत्कारों को मिला। किन्तु परमाण्विक व्यवस्था में, चित्ताकर्शक प्रकृति में, भयावह प्राकृतिक प्रकोपों में और विराट् ब्रह्माण्डीय प्रक्रियाओं में चमत्कार को मानव का कोई भी वर्ग अनदेखा नहीं कर सका। अतः मानवीय चमत्कारों को कसौटियों से दूर रखते हुए अतिमानवीय चमत्कारों और सम्पर्कों– जिन्हें हम करतार के चमत्कार व सम्पर्क कह सकते हैं– का सहारा अपरिहार्य हो गया। करतार से सम्पर्क का माध्यम बनना और सम्प्रेषित संन्देश के नाम पर अपने विचार प्रचारित कर विश्व के विवेकहीन वृहदांश को फँसाकर स्वार्थ साधना अनार्यों का धन्धा बन गया। जन्म के पूर्व के और मृत्यु के बाद के वृत्त से अनभिज्ञ होने के कारण पूर्व जन्म के उदाहरणों/अपवादों की छाया में मृत्यु के बाद के जीवन में इस जन्म और लोक की लुभावनी और अतृप्त कामनाओं की अबाध पूर्ति की ठेकेदारी भी उपासना के मार्ग की भिन्नताओं व चयन में एक कारक बना। बड़ा आश्चर्य है कि लोग पुण्य का फल तो चाहते हैं, परन्तु पुण्य को नहीं चाहते (करते) और पाप का फल नहीं चाहते

हैं, परन्तु पापों को ही सदा करते रहते हैं। कहा भी है:
"पुण्यस्य फलमिच्छन्ति पुण्यं नेच्छन्ति मानवाः, फलं नेच्छन्ति पापस्य पापं कुर्वन्ति यत्नतः।'

उदात्तता श्रमसाध्य है जिसके लिए प्रतिपल सावधान रहते हुए सतत प्रयास आवश्यक है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य रूपी षड्रिपुओं को थोड़ा भी अवसर मिला तो मानव को पतन की ओर धकेल देता है। जैसे संसार में अच्छाई का फल तत्काल नहीं दिखता, उसी प्रकार बुराई का फल भी नहीं दिखता। इससे मनुष्य को कर्मफल के सिद्धान्त पर भी भ्रम हो जाता है, और/या कर्मफल से मुक्ति का भी भ्रम हो जाता है और वह पाप करने के साथ साथ पाप के फल से निरन्तर बचना चाहता है। इस असंभव अतृप्त मानवीय इच्छा का लाभ अनार्यों ने भरपूर उठाया। पापनिवृत्ति और स्वर्गप्राप्ति को सरलतम मार्ग की होड़ मच गई। जघन्यतम पाप को क्षमा कराने के सरलतम उपाय की दुकानें बन गई। लक्ष्य स्वमत की अधिकतम भीड़ जमा कर उनसे स्वार्थ साधना तथा उस भीड़ का उपयोग करके दूसरे समूहों का विनाश करके भी कुछ स्वार्थ भीड़ के साधना। इसका जघन्यतम उदाहरण पूरे विश्व की शांति भंग कर रहा इस्लाम का आतंकी रूप है।

ये मत सम्प्रदाय इस लोक में पाप से छुटकारा तो अस्पष्ट शब्दों में देते हैं। किन्तु मृत्योपरांत सुनिश्चित छुटकारा दिलाते हैं। क्योंकि मृत्यु के बाद न मृतक चुनौती दे सकता है और न मृतक के परिजन। हाँ मृतक के परिजनों को शांत करने हेतु मृतक व उसके परिवार को गौरव अवश्य देते हैं और उपलब्ध हो तो धन भी। जब तक विवेकहीन मनुष्य जागेंगे नहीं, यह दुकानदारी चलती रहेगी और दुनिया सुखी कभी न होगी। कहा भी है:

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यानां तु व्यतिक्रमः, त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते दुर्भिक्षं, मरणं भयं।

अर्थात् जहाँ अपूज्यों की पूजा होती हैं, पूजनीयों का तिरस्कार होता है, वहाँ अकाल, मौत और भय का ही साम्राज्य होता है। वर्तमान इसका प्रमाण है। लगभग १ अरब ९६ करोड़ ८ लाख ४५ हजार वर्ष तक ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना आर्श परम्परा से चलती रहने के पश्चात् गत पाँच सात हजार वर्षो से अपूज्यों की पूजा से विश्व नर्क बना हुआ है। इस काल में अज्ञानी लोगों ने भौतिक अग्नि, जल, भूमि को; अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्प, ज्वालामुखी, महामारी, शीतलहर, लू इत्यादि प्रकोपों के कारणों से अनजान होने से इनके काल्पनिक कारक देवताओं को; ग्रहण, उल्कापातों, पुच्छलतारों आदि खगोलीय प्रक्रियाओं से घबराकर ग्रहनक्षत्रों को, सन्निपात से ग्रस्त मानवो को; लाशों को; मानवों को, पुस्तकों को, पत्थरों की मानवाकार ही नहीं, पक्षीपश्वाकार मूर्तियों को ही नहीं, अनगढ़ पत्थरों को भी पूजा। उनके आगे पशु, पक्षियों और मानव तक की बलि दी और आज भी दे रहे हैं। उनके लिए यही ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना है। चण्डीगढ़ में देखा कि दुकानदार मुँह खोलकर आलाप निकाल रहा है। पूछा तो पता चला उपासना कर रहा है। मनके फिराना उपासना है। कूप मण्डूक बनकर सत्य, तर्क, युक्ति और प्रमाण से दूर भागना उपासना है। भूखों मरना उपासना है। शरीर को यंत्रणा देना उपासना है। नाचना भी उपासना है, वाममार्गी क्रियाएँ भी उपासना है।

स्वर्ग साधक त्रिणाचिकेत अग्नियाँ तो कहीं खो गई हैं। यहाँ तो धन के बदले स्वर्ग मिलता है, लोगों का ईमान बदलकर स्वर्ग मिलता है, लोगों की हत्या करके स्वर्ग मिलता है, खुद बम बनकर सैकड़ों निरपराधों को मारने से भी स्वर्ग मिलता है और सामूहिक आत्महत्या–हाराकिरी करने से, स्थान विशेष में मरकर भी स्वर्ग मिलता है, जीवित पत्नी को मृत पति के साथ जलाकर स्वर्ग मिलता है, दिन विशेष को खटाई न खाने से स्वर्ग मिलता है, विशेष आकार के तिलक लगाने से स्वर्ग मिलता है, गुरु को सर्वस्व अर्पण करने से स्वर्ग मिलता है, मद्य, मांस, मीन, मुद्रा, मैथुनादि पंचमकार स्वर्ग का साधन है। आराध्य देव–देवियाँ दारू, भांग, खून पीते हैं, मांस खाते हैं। उन्हें तेल चढ़ता है, धतूरे चढ़ते हैं, नारियल भी चढ़ते हैं और सिर के केश भी।

महायज्ञों के माध्यम से जड़ और चेतन देवताओं की यथार्थपूजा भूल चुके हैं। अग्नि रूपी मुख से देवताओं को भोजन नहीं कराया जाता, क्योंकि वह तो भस्मीभूत हो जाता है क्योंकि अग्नि भोग को खा जाती है; सच्चा मुख जो है। शेष सूक्ष्म रूप में परिवर्तित हवि तो मुझे अकेले या मेरे परिवार को नहीं मिलती; औरों को हवि ग्रहण कराने से मुझे क्या? किन्तु जो मुख खा नहीं सकते, उन पर भोग चिपकाया जाता है, जो चींटियाँ खाती है, या फिर चढ़ाने वाला ही। कोई तर्क नहीं, कोई युक्ति नहीं! मानव होकर कोई चिंतन मनन नहीं। बिना प्रमाण के मानना और बिना सत्य की पहचान किए भावना। हमारी भावना, हम चाहें जो करें, आपको क्या? कोई भी मत प्रवर्तक या अनुयायी अपने मन्तव्य को कसौटी पर घिसने को तैयार नहीं, क्योंकि वे जानते हैं कि वे झूठे हैं।

सच्चिदाननद स्वरूप, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, निर्विकल्प रूप से एकमात्र उपास्य परमात्मा से स्वयं विमुख हो औरों को भी विमुख करते स्वार्थान्ध और विवेकहीन भक्तों को ललकारते एक हाथ में निर्भ्रान्त होकर पूर्ण विश्वास से वेदों को थामे, और दूसरे हाथ में निर्मम आग्रह के साथ सत्य के दण्ड में लगाई परमात्मा के निजनाम ओ३म् की पताका लहराते अटूट ईश्वर विश्वासी
देव दयानन्द की गर्जती वाणी कहती है: –

"अब कहिये 'भाव' सच्चा है वा झूठा? जो कहो सच्चा है तो तुम्हारे भाव के आधीन होकर परमेश्वर बद्ध हो जायेगा और तुम मृत्तिका में सुवर्ण, रजतादि; पाषाण में हीरा, पन्ना आदि; समुद्रफेन में मोती, जल में घृत, दुग्ध, दधि आदि और धूलि में मैदा, शक्कर आदि की भावना करके उन को वैसे क्यों नहीं बनाते हो? तुम लोग दुख की भावना कभी नहीं करते; वह क्यों होता? और सुख की भावना सदैव करते हो; वह क्यों नहीं प्राप्त होता? अन्धा पुरुष नेत्र की भावना करके क्यों नहीं देखता? मरने की भावना नहीं करते; क्यों मर जाते हो? इसलिये तुम्हारी भावना सच्ची नहीं। क्योंकि जैसे में वैसी करने का नाम भावना कहते हैं। जैसे अग्नि में अग्नि, जल में जल जानना और जल में अग्नि, अग्नि में जल समझना अभावना है। क्योंकि जैसे को वैसा

जानना ज्ञान और अन्यथा जानना अज्ञान है। इसलिये तुम अभावना को भावना और भावना को अभावना कहते हो।" और समझाते हैं:

"स्तुति, प्रार्थना, उपासना श्रेष्ठ ही की की जाती है। श्रेष्ठ उसको कहते हैं जो अपने गुण, कर्म, स्वभाव और सत्य–सत्य व्यवहारों में सब से अधिक हो। उन सब श्रेष्ठों में भी जो अत्यन्त श्रेष्ठ उस को परमेश्वर कहते हैं, जिस के तुल्य न कोई हुआ, न है और न होगा। जब तुल्य नहीं तो उससे अधिक क्यों कर हो सकता है? जैसे परमेश्वर के सत्य, न्याय, दया, सर्वसामर्थ्य और सर्वज्ञत्वादि अनन्त गुण हैं, वैसे अन्य किसी जड़ पदार्थ वा जीव के नहीं हैं। जो पदार्थ सत्य है, उस के गुण, कर्म, स्वभाव भी सत्य ही होते हैं। इसलिये सब मनुष्यों को योग्य है कि परमेश्वर ही की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करें, उससे भिन्न की कभी न करें। क्योंकि ब्रह्मा, विष्णु, महादेव नामक पूर्वज महाशय विद्वान्, दैत्य दानवादि निष्ट मनुष्य और अन्य साधारण मनुष्यों ने भी परमेश्वर ही में विश्वास करके उसी की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करी, उससे भिन्न की नहीं की। वैसे हम सब को करना योग्य है।"

प्रश्नोत्तर रूप में महर्षि इस प्रकरण पर विचार करते लिखते हैं:

"(प्रश्न १) परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना करनी चाहिए वा नहीं?

(उत्तर) करनी चाहिये। (प्रश्न२) क्या स्तुति आदि करने से ईश्वर अपना नियम छोड़ स्तुति, प्रार्थना करनेवाले का पाप छुड़ा देगा? (उत्तर) नहीं। (प्रश्न३) तो फिर स्तुति प्रार्थना क्यों करना?(उत्तर) उनके करने का फल अन्य ही है। (प्रश्न ४) क्या है? (उत्तर) स्तुति से ईश्वर में प्रीति, उस के गुण, कर्म, स्वभाव से अपने गुण, कर्म, स्वभाव का सुधारना, प्रार्थना से निरभिमानता, उत्साह और सहाय का मिलना, उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होना। (प्रश्न५) इनको स्पष्ट करके समझाओ। (उत्तर) जैसे–

स पर्यागाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरँशुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी
परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।। यजु. ४०।८।।

ईश्वर की स्तुति–वह परमात्मा सब में व्यापक, शीघ्रकारी और अनन्त बलवान् जो शुद्ध, सर्वज्ञ, सब का अन्तर्यामी, सर्वोपरि विराजमान, सनातन, स्वयंसिद्ध, परमेश्वर अपनी जीवरूप सनातन अनादि प्रजा को अपनी सनातन विद्या से यथावत् अर्थों का बोध वेद द्वारा कराता है। यह सगुण स्तुति अर्थात् जिस–जिस गुण से सहित परमेश्वर की स्तुति करना वह सगुण; (अकाय) अर्थात् वह कभी शरीर धारण व जन्म नहीं लेता, जिस में छिद्र नहीं होता, नाड़ी आदि के बन्धन में नहीं आता और कभी पापाचरण नहीं करता, जिस में क्लेश, दुःख, अज्ञान कभी नहीं होता, इत्यादि जिस–जिस राग, द्वेषादि गुणों से पृथक् मानकर परमेश्वर की स्तुति करना है वह निर्गुण स्तुति है। इस से फल यह है कि जैसे परमेश्वर के गुण हैं वैसे गुण, कर्म, स्वभाव अपने भी करना। जैसे वह न्यायकारी है तो आप भी न्यायकारी होवे। और जो केवल भांड के समान परमेश्वर के गुणकीर्तन करता जाता और अपने चरित्र नहीं सुधारता उसका स्तुति करना व्यर्थ है।"

उपासना कैसे करें? महर्षि बताते हैं: "जब उपासना करना चाहें तब एकान्त शुद्ध देश में

जाकर, आसन लगा, प्राणायाम कर बाह्य विषयों से इन्द्रियों को रोक, मन को नाभिप्रदेश में वा हृदय, कण्ठ, नेत्र, शिखा अथवा पीठ के मध्य हाड़ में किसी स्थान पर स्थिर कर अपने आत्मा और परमात्मा का विवेचन करके परमात्मा में मग्न हो कर संयमी होवें। जब इन साधनों को करता है तब उस का आत्मा और अन्तःकरण पवित्र होकर सत्य से पूर्ण हो जाता है। नित्यप्रति ज्ञान विज्ञान बढ़ाकर मुक्ति तक पहुंच जाता है। जो आठ पहर में एक घड़ी भर भी इस प्रकार ध्यान करता है वह सदा उन्नति को प्राप्त हो जाता है। वहाँ सर्वज्ञादि गुणों के साथ परमेश्वर की उपासना करनी सगुण और द्वेष, रूप, रस, गन्ध, स्पर्शादि गुणों से पृथक् मान, अतिसूक्ष्म आत्मा के भीतर बाहर व्यापक परमेश्वर में स्थित हो जाना निर्गुणोपासना कहाती है।" साथ ही चेतावनी देते हैं:

"विना शुद्ध कर्म और परमेश्वर की उपासना के मृत्यु दुःख से पार कोई नहीं होता। अर्थात् पवित्र कर्म, पवित्रेपासना और पवित्र ज्ञान ही से मुक्ति और अपवित्र मिथ्याभाषणादि कर्म पाषाणमूर्त्त्यादि की उपासना और मिथ्याज्ञान से बन्ध होता है। कोई भी मनुष्य क्षणमात्र भी कर्म, उपासना और ज्ञान से रहित नहीं होता। इसलिये धर्मयुक्त सत्यभाषणादि कर्म करना और मिथ्याभाषणादि अधर्म को छोड़ देना ही मुक्ति का साधन है।"

परमात्मा के स्थान पर पत्थर रखकर पूजने पर महर्षि के वचन देखें:

"जब कोई किसी को कहे कि हम तेरे बैठने के आसन वा नाम पर पत्थर धरें तो जैसे वह उस पर क्रोधित होकर मारता वा गाली प्रदान देता है; वैसे ही जो परमेश्वर की उपासना के स्थान हृदय और नाम पर पाषाणादि मूर्त्तियाँ धरते हैं, उन दुष्टबुद्धिवालों का सत्यानाश परमेश्वर क्यों न करे?"

अंत में स्वमन्तव्यामन्वव्यप्रकाश से स्तुति, प्रार्थना व उपासना की परिभाषाएँ :

४८–'स्तुति' गुणकीर्त्तन श्रवण और ज्ञान होना, इस का फल प्रीति आदि होते हैं।

४६–'प्रार्थना' अपने सामर्थ्य के उपरान्त ईश्वर के सम्बन्ध से जो विज्ञान आदि प्राप्त होते हैं उन के लिये ईश्वर से याचना करना और इस का फल निरभिमान आदि होता है।

५०–'उपासना' जैसे ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं वैसे अपने करना, ईश्वर को सर्व व्यापक, अपने को व्याप्य जान के ईश्वर के समीप हम और हमारे समीप ईश्वर है ऐसा निश्चय योगाभ्यास से साक्षात् करना उपासना कहाती है, इस का फल ज्ञान की उन्नति आदि है।

धन्य है सच्ची स्तुति प्रार्थना उपासना के मार्गदर्शक देव दयानन्द!!

ऋषिगाथा

[गतांक में आपने पढ़ा:— वैराग्य के रथ पर आरूढ़ शुद्ध चैतन्य को पुन: मूलशंकर बनाने पिताजी घर की ओर भेज देते हैं। किंतु जहां पार्थिव पिंडी को शिव मानकर जहाँ पूजा होती हो, लाडली भगिनि और स्नेहिल चाचा जहाँ मृत्यु के ग्रास बन भय व शोक देते हों- मोरवी के उस मार्ग से सायास पलट हमारा नायक शेष रात्रि व अगला पूरा दिन एक वृक्ष पर व्यतीत कर पुन: सच्चे शिव और अमृतत्व की ओर चल दिया। स्वामी पूर्णानंद जी से संन्यास ग्रहण कर काषाय बाना धारण कर कुछ योगियों व अनेकों भोगियों से मिलता हमारा नायक निरंतर उन्नत मार्ग पर कैसे चढ़ता गया और कैसे उच्चतर लक्ष्य पर दृष्टि जमाई- पढ़ें-]

विविध पथ

अन्तस भावों को भीषण पर्वत, नहीं रोक सकते उठकर।
अन्तस भावों को झंझा झोंखें, नहीं रोक सकते बह कर ।।१।।
इच्छायें मानव की जग में, कब मानव से थम पाती हैं।
इच्छायें मानव की ज्वाला, मुखियों में भी मुस्काती हैं।।२।।
हों इच्छायें यदि प्रबल, पंथ की, भारी खाई पट जाती।
मानव की इच्छाओं से , पाषाणों पर कलिका खिल जाती।।३।।
पर इच्छा साधन हेतु सदा, पांवों में कण्टक चुभते हैं।
इच्छा साधक मानव को, पद पद पर विष प्याले मिलते हैं।।४।।
यह भावी स्वामी दयानन्द, अन्तर में इच्छायें लेकर।
जग बाधा सागर तर जाने, आ पहुंचा निज तन मन दृढ़ कर।।५।।
निस्तब्ध रात्रि में पथ तय करता, किसी वृक्ष से टकराया।
उस रात उसी की शाखाओं पर, सुखद बसेरा हो आया।।६।।
इतिहास बनाने वालों को, क्या पथ की बाधायें।
ठोकर खाकर, टकरा टकरा कर, निखरा करतीं आशायें।।७।।
उनका यौवन विपदाओं को, मस्तक पर नित्य सजाता है।
उनका मधु जीवन झंझा झोंखों को, वर माल बनाता है।।८।।
विद्रोही साधक ने देखा, प्रात: कुछ अनुचर खोज रहे।
पथ खोज रहे पदचिह्नों को, लखते हर मन्दिर खोज रहे।।९।।
अन्वेषक आगे बढ़े किन्तु यह, रहा दिवस भर तरू ऊपर।
संध्या का मदमाता इंगित , ले आया शंकर को भू: पर।।१०।।
साधक आराध्य दर्शनों हित, प्राय: ऐसे जाया करते,
जग त्याग प्यार करने उससे, निशि में ही उठ धाया करते ।।११।।

कितना आकर्षण वह प्रियतम, जिस हेतु चला मानव जाता।
मृदु स्नेहमयी माता, रमणी, का पाश न जिसे बांध पाता।।१२।।
सन्तान,धरा, वैभव,वसुधा के, सब बन्धन खुल जाते है।
संसार मोह पर लात मार, कितने गौतम बन जाते हैं।।१३।।
सिद्धार्थ धरा धन त्याग चले, उनके पथ में क्या थी अड़चन।
पर यह शंकर इसके पथ में, कितनी ठोकर, कितने बन्धन।।१४।।
यह गया अहमदाबाद वहाँ से, जा पहुँचा चेतन मठ में।
आशा थी तृप्त कभी होंगी, जो प्यास लगी अंतर घट में ।।१५।।
आशा के झोंखे ही जीवन की ,तरणी पार लगाते हैं।
आशा के बादल मानव को, मरूथल में से ले जाते हैं।।१६।।
आशा का आलिंगन कर मानव, असिधारा पर जा सकता।
केवल आशा पाकर पंखी,ज्वाला में पंख जला सकता।।१७।।
चेतन मठ तज, चल दिया बड़ौदा, गया वहां से कर्णाली।
थी चाह यही-कब भर पायेगी, रीती अंतर तल प्याली।।१८।।
सोचा कर्णाली में शंकर ने, क्यों न करूं सन्यास ग्रहण।
रहने, खाने नामादिक की, पल में टल जायेंगी अड़चन।।१९।।
विचरे लोचन-भीषण वन में, दो साधु विरक्त अभी आये।
चल पड़ा हृदय में उत्कंठा ले, हर्षाया दर्शन पाये।।२०।।
थे एक पूर्ण आनन्द उन्ही ने, मन मांगा सन्यास दिया।
धर दयानन्द अभिमान इसे, आनंद भक्ति के पास किया।।२१।।
जग में मानव को कभी-कभी , अड़चन अनुगत बन जाती है।
मानव उपवन में कभी, कामना से कलिका खिल जाती हैं।। २२।।
तज कर दक्षिण पथ दयानन्द, सुन्दर व्यसाश्रम आ पहुँचा।
थे योगी योगानन्द इन्हीं से , योग साधना पर पहुँचा ।।२३।।
आकर छिनूर में कृष्ण शास्त्रवित्, से व्याकरण पढ़ा इसने।
पहुँचा चाणोद पुनः अन्तर में, यौगिक ज्ञान भरा इसमें।।२४।।
यह जीवन का इतिहास पराये, पृष्ठों से लिख पाता है।
मानव ही क्या पशु-पक्षी तक, परिचय से निज बन जाता है।।२५।।
दो साधक साधक से भेंटे, श्री ज्वालागिरि, श्री शिवानन्द ।
दुग्धेश्वर मन्दिर पर जाकर , हर्षाया स्वामी दयानन्द ।।२६।।
बोले-हूँ आभारी उनका, जिनने शुभ योग बताया है।

जग की चंचल लहरों पर बहता, बेड़ा पार लगाया है।।२७।।

उपकारी पर आभार सुमन, बतलाते श्रद्धा का परिचय।
मस्तक उसको नत हो जाता, हो जिस से कुछ साधन संचय।।२८।।

बीते दिन सौरभ से उड़ते, सुन लिया-योगी कोई वन में।
रहते आबू पर दर्शन की, अभिलाषा जाग उठी मन में।।२९।।

उत्तुंग श्रृंग कर अन्वेषण, था पाया भवानिगिरि सुन्दर।
चल दिया वहां यह साधक, जिस पथ पर विराजते महार्षिवर।।३०।।

लेकर उन से भी योग ज्ञान, उत्तराखण्ड हरिद्वार गया।
चंडीदेवी के मन्दिर पर, स्वामी कर गंगा पार गया।।३१।।

बढ़ चल, बढ़ चल, पथ पर स्वामिन, पथ पर बढ़ते रहना जीवन।
तेरे पथ पर बिखरायेगा, आगत श्रद्धा के रम्य सुमन।।३२।।

यह कैसा चण्डी का मन्दिर, भैंसों बकरों की वधशाला।
क्या यह चंडी, अथवा आराधा क, ही भरते रक्तिम प्याला।।३३।।

जग में कितने अभिशाप नित्य, वरदान बने होते पोषण।
कितने मानव हितचिन्तक बन, करते पथ भूलों का शोषण।।३४।।

था उन्नीस सौ ग्यारह सम्वत्, लग रहा मधुर मधु बना कुम्भ।
साधक, सन्तों ,भक्तों भण्डारों, के भावों से भरा कुम्भ।।३५।।

उठ गया आज, चल दिये दया आनन्द, जहां था ऋषिकेश।
थे साधु अनेकों उनमें भी, बहु प्रवंचकों के विविध वेष।।३६।।

निर्देश मिला दो साधुजनों का, टिहरी पहुँचा दयानन्द।
उत्तुंग राज प्रासादों के, प्रांगण में स्वामी दयानन्द।।३७।।

तू क्यों मारा मारा फिरता, वह सिद्धि कौन सी पानी है।
अथवा तुझको ही सत्तावन की, क्रान्ति महान् बनानी है।।३८।।

थी आंखें संज्ञा शून्य विप्रवर, पशु अंतड़ियाँ नोंच रहा।
बैठा समीप ही मनुज दूसरा, खंड खंड शिर खींच रहा।।३९।।

उद्देश्य हेतु कितने कंटक, कर से सहलाने पड़ते हैं।
जग कहता-अवसर पर, गर्दभ तक बाप बनाने पड़ते हैं।।४०।।

चल दिया निवेदन किये बिना, स्वामी ने दूजा स्थान चुना।
उन भोले पशुओं की बलि में, बिलखता क्रन्दन गान सुना।।४१।।

मानव विचार कर भोग भोग, लघु जीव न तेरे योग्य भोग।
अपनी अतृप्त पिपासा का, मत इन प्राणों पर कर प्रयोग।।४२।।

कुछ देखे तन्त्र ग्रन्थ था जिनमें , मां बहिनों से दुरागमन।
आहार मांस था, मद्यपान था, काँपा स्वामी का तन-मन।।४३।।
कितना जग का वैचित्र्य, सुजन पथ पथ पर ठुकराया करते।
वृण से घातक नर पशु धरती पर, वैभव उपजाया करते।।४४।।
सुन्दर उपकारक मृग छौने, भर पेट न वन तृण चर सकते।
विष भरे भुजंगम काल कूट, मणियों की छाया में पलते।।४५।।
स्वामी जग का वैचित्र्य आँक, तज टिहरी श्रीनगर आया।
केदारघाट रमणीय गया, अन्तर अरविन्द विहंस आया।।४६।।
गंगागिरि नामक साधु रत्न, बन अभिन्न परिचित होकर।
चल दिया मिलन सुख सा स्वामी, कुछ पाकर, कुछ अपना खोकर।।४७।।
गंगागिरि क्या कितने स्वजनों को, त्याग विजय पथ जाना है।
ए स्वामिन्! तुमको हर पद पद पर, बंधन हैं, बढ़ जाना है।।४८।।
मत रूकना ओ हरि मतवाले, तू मत जग पथ पर रुक जाना।
मादक आकर्षण रोकेंगे रे !तुझे शपथ मत थम जाना।।४९।।
मत रूकना चारों ओर भले, हँसती मधुमय फुलवारी हो।
मत रूकना, आकर्षक इंगित हों, प्रियतम हो, प्रियनारी हो।।५०।।
भोले पंखी! मत फँसना, कितनी, आंखें जाल बिछायेंगी।
कितनी अभिलाषायें अपने, आकर्षक सर बरसासगी।।५१।।
स्वामिन्! मत रुकना तुझे भले, अपना सर्वस्व लुटाना हो।
मत रुकना चाहे लक्ष्य हेतु, चलते चलते मर जाना हो।।५२।।
मन में पूरित अभिलाषायें, यौवन, तन में सुन्दर निखार।
मतवाला मांझी चला जा रहा, जग लहरों पर मृत्यु पार।।५३।।
जा पहुँचा मुनि अगस्त्य आश्रम, शिवपुरी धाम पर्वत माला।
गाता जाता अन्तस्थल तारों पर, शिव गायन मतवाला।।५४।।
शुभ शीत गया गत के प्रदेश, सर्दी न अभी जा पाई थी।
जैसे मुर्झा कर फूल चुआ, पर गन्ध सुगन्ध सुहाई थी।।५५।।
अब तक उत्तुंग हिमालय पर, फैलाता था सर्दी का अंचल।
आलस, सुख उत्पादन करता, बिखराता निर्जन में मंगल।।५६।।
पर स्वामी के उत्सुक लोचन, प्रतिपल थे पर्वत माला पर।
सोचा करता होगा कोई, तपधर योगी गिरिमाला पर।।५७।।

 -प. इन्द्र विद्यावाचस्पति

महर्षि की मृत्यु का प्रभाव

ऋषि दयानन्द की मृत्यु आकस्मिक वज्र की भाँति आर्यसमाज के सिर पर गिरी। ब्रह्मचारी और योगी के सम्बन्ध में आर्यपुरुषों की भावना थी कि वह कम-से-कम सौ साल तक जिएंगे, वे उस बालक की भांति निश्चिन्त थे, जो समझता है कि पिता की छत्रछाया सिर पर सदा विद्यमान रहेगी। उन्हें यह ध्यान भी नहीं था कि एकदम उनके सिर पर से ऋषि का रक्षक हाथ उठ जायेगा। मृत्यु का धक्का पहले क्षण में असह्य प्रतीत हुआ। आर्यसमाज के सभासदों के हाथ में जो समाचार-पत्र थे, उनके उस समय के लेखों से विदित होता है कि ऋषि की मृत्यु के समाचार ने एक बार तो हाथ-पाँव फुला दिये। मेरठ के 'आर्यसमाचार' ने दु:खद समाचार सुनाते हुए एक लेख प्रकाशित किया था। उसके निम्नलिखित वाक्य उस निराशा के भाव को सूचित करते हैं जिसका आर्यपुरुष अनुभव कर रहे थे।

''रो,रो,ए बदबख्त आर्यावर्त, खूब दिल खोल कर रो ले। आज तेरी फजलियत का सूरज गरूब हो गया। जिस जुल्मोतेज हालत ने तुझको इस नौबत पर पहुंचाया था, उससे ज्यादा जमाना स्याह इस वक्त तेरी नजर के रोबरू मौजूद हैं। जिस फख्रे मुल्क पर तुझ को नाज था, वही आज तुझ में से उठ चला। लखूखा तमन्नाओं का खून हो गया।'' इत्यादि।

लाहौर के 'देशोपकारक' ने निम्नलिखित पंक्तियों में अपनी असह्य वेदना प्रगट की थी:-

''ऐ आर्यावर्त, तेरी बदकिस्मती पर मुझे रोना आता है। ऐ आर्यावर्त, तेरी यतीमी पर मेरा दिल खून होता है ऐ आर्यावर्त , तेरी बेबसी पर मुझे गैरत आती है। ऐ आर्यावर्त, तेरी बेपरोवाली पर मेरा दिल कुम्हलाया जाता है। कैसी जल्दी तेरे प्यार के सरचश्मे को बन्द कर दिया।''

ये दो उदाहरण इस बात को साफ कर देने के लिए पर्याप्त है कि ऋषि की मृत्यु का आर्य जनता पर पहला असर बहुत ही निराशाजनक हुआ। वे अपने आप अपने को बेपर के पक्षी की तरह असमर्थ समझने लगे। आर्यसमाज के आकाश में घोर अंधियारी सी छा गई। अब तक हरेक कठिनाई का हल स्वामी जी थे। अब कठिनाईयों का पहाड़ आँखों के सामने आने लगा। काम अधूरा रह गया, रास्ता बीच ही मे कट गया, आर्य पुरुषों को भान होने लगा कि आर्यसमाज की नौका मंझधार में फंस गई, अब इसका निकलना दुष्कर है।

उत्तरदायित्व का अनुभव

परन्तु शीघ्र ही आर्यसमाज के सभासद संभल गए। ऋषि की स्मृति से ऋषि का उपदेश जर्बदस्त निकला। ऋषि स्मृति भी उपदेश के प्रभाव को बढ़ाने का कारण बन गई। पहले धक्के का मोहक असर दूर होते ही आर्यपुरूषों के हृदयों में एक नया भाव उत्पन्न होने लगा। वह नया भाव था, उत्तरदायित्व का भाव। अब तक आर्यपुरूष अपने आपको नाबालिग समझते थे, वे करते सब कुछ थे, परन्तु इसी विचार से प्रेरित

होकर करते थे कि दुनिया और दूसरी दुनिया के स्वाामियों के सामने उत्तरदाता स्वामी जी होंगे। ऋषि की मृत्यु के धक्के का पहला प्रभाव दूर होते ही उत्तरदायित्व के अनुभव ने आर्यपुरुषों के हृदय में धीरे-धीरे प्रवेश किया। वह समय आर्यपुरुषों की परीक्षा का था, आर्यसमाज के भाग्य-निर्णय का था। यदि ऋषि की मृत्यु का यह प्रभाव होता कि आर्य पुरूष साल-दो-साल के लिए भी अकर्मण्य होकर बैठ जाते तो सिद्ध हो जाता कि स्वामी दयानन्द ने आर्यपुरुषों को जो कुछ सिखाया था वह अस्थायी था। यदि आर्यपुरुष ऋषि के कार्यक्षेत्र से प्रयाण करते ही उनके स्थान पर किसी आचार्य की तलाश करने लगते तो वे अपने आपको नाबालिग सिद्ध कर देते और दुनिया को यह दिखाते कि दयानन्द के उपदेश उनकी जीभ पर ही हैं, उनके हृदयों में नहीं। ऋषि के मरने पर हम हर्ष पूर्ण आश्चर्य के साथ देखते हैं कि एक भी आर्यपुरुष यह शब्द नहीं उठाता कि ऋषि की स्थानपूर्ति के लिए किसी व्यक्ति को तलाश करना चाहिए। ऋषि दयानन्द आर्यसमाज का एक प्रजा-सत्तात्मक संगठन बनाना चाहते थे, समाज की नींव में आचार्य ने समष्टि के भाव को भरा था, यदि ऋषि के अलग होते ही आर्य पुरूष उस सिद्धान्त को भूल जाते, तो आर्यसमाज का इतिहास किसी दूसरी ही तरह लिखा जाता। उस दशा में आर्यसमाज का इतिहास इस्लाम या ब्रह्मसमाज के तमाम व्यक्तियों का इतिहास होता, जनता का इतिहास नहीं। आर्यसमाज परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया। उसने ऋषि की स्मृति को स्थिर करने का यही उपाय समझा कि ऋषि के उपदेश को सर्वोपरि रखा जाये।

स्वामी जी की अकाल मृत्यु से जो मूर्छा उत्पन्न हुई थी, वह शीघ्र ही जाती रही और आर्य जनता ने अपने आपको बालिग मानकर उत्तरदायित्व का अनुभव किया। ईश्वर को आचार्य और पथदर्शक बनाकर शीघ्र ही आर्य पुरुष ऋषि के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कटिबद्ध हो गए।

3. ऋषि -स्मारक

ऋषि की मृत्यु के पीछे चेतना पैदा होने पर जो पहला विचार आर्यजगत् में पैदा हुआ, वह यह था कि आचार्य की स्मृति को कैसे ताजा रखा जाये। इस विषय में आर्यजगत् की परीक्षा थी। स्वभाव से मनुष्य अपने प्रिय की स्मृति को स्थूलरूप में चिरस्थायी बनाना चाहता है। वह ऐसा स्मारक चाहता है जो शानदार भी हो और सरल भी हो। किसी की याद में किताब लिख देना सरल हो सकता है पर स्थूल दृष्टि से पुस्तक शानदार नहीं है, अपने प्रिय की याद में चीन की दीवार खड़ा कर देना शानदार कहा जा सकता है, परन्तु सरल नहीं है। साधारण मनुष्य दोनों गुाणों को देखता है और किसी स्तूप, मकबरे या महल के रूप में स्मृति को अमर करने का यत्न करता है। ऋषि दयानन्द ने उदयपुर में कविराज श्री श्यामलदास जी ने कहा था-" मेरे मरने के पश्चात् मेरी अस्थियों को किसी खेत में डाल देना, कोई समाधि या कोई चिन्ह कदापि न बनाना।"

कविराज ने कहा-" महाराज, मैंने तो यह सोच रखा था कि अपनी एक पत्थर की मूर्ति बनवाऊँ और उसे किसी जगह रखवा दूँ ताकि मेरे पश्चात् वह मेरा स्मारक समझा जाये।"

स्वामी जी ने कहा था कि -' देखना कविराज जी, ऐसा भूल कर भी मत करना। बस यही तो

मूर्ति-पूजा की जड़ हुआ करती है।''

ऋषि का यह उपदेश था। वह शानदार से शानदार और सरल से सरल भी ऐसे स्मारक को पसन्द नहीं करते थे, जिसमें मूर्तिपूजा की बू पाई जा सके। यदि आर्य जनता ऋषि की यादगार में कोई स्तूप या मकबरा बनवा देती तो आज हिन्दू स्त्रियाँ उस पर फूल और बताशे चढ़ा कर अपने जीवनों को सफल मान रही होती।

आर्यसमाज ने ऋषि दयानन्द के आशय को खूब समझ लिया और स्मारक की ऊपर बताई हुई दो शर्तो के साथ एक तीसरी और शर्त जोड़ दी । वह शर्त यह थी कि स्मारक शानदार और सरल होने के साथ-ही - साथ उपयोगी भी हो। अजमेर से लौटकर आर्यपुरूषों ने अपने स्थानों पर स्मारक की चर्चा प्रारम्भ की । अजमेर , प्रयाग, मेरठ , फिरोजपुर, मुलतान और लाहौर में यह चर्चा अधिक वेग के साथ होने लगी। प्राय: सभी स्थानो में उसका रूप एक-सा था। यह आश्चर्य की बात है । चर्चा यही थी कि ऋषि की यादगार शिक्षणालय के रूप में स्थापित की जाये। इससे सूचित होता है कि आर्यसमाज की भावना दिखावे के स्मारक के विरुद्ध थी। आर्यजनता का दिमाग ही ऐसे ढंग का बना हुआ था कि वह स्मारकरूप में वैदिक शिक्षणालय से अलग वस्तु नहीं ऐसे सोच सकती थी।

स्मारक की चर्चा कहीं पाठशाला के रूप में फलीभूत हुई तो कहीं स्कूल के रूप में परिणत हुई। मेरठ में हम सुशिक्षा-प्रचारिणी नाम की सभा , और आर्यपाठशाला नाम की पाठशाला का वृतान्त पढ़ते है। प्रयाग में किसी-न-किसी रूप में पाठशाला का कार्य जारी रहा। अजमेर में परोपकारिणी सभा में जो प्रस्ताव स्वीकृत हुए, उनकी चर्चा हम करेंगे। पंजाब में स्मारक की चर्चा तीन स्थानों पर आरम्भ हुई थी, परन्तु लाहौर के सिवा अन्य किसी स्थान पर वह फलीभूत नहीं हो सकी। लाहौर में वह शीघ्र ही फलीभूत हो गई और साहस के साथ कहा जा सकता है कि कल्पनीय शीघ्रता से लाहौर निवासियों ने अपने आपको स्वामी जी का सच्चा भक्त सिद्ध कर दिया।

4. वैदिक शिक्षणालय

ऋषि दयानन्द के जीवनकाल में ही वैदिक ग्रन्थों की शिक्षा का प्रचार करने के लिए एक शिक्षणालय की आवश्यकता का अनुभव हो रहा था। ऋषि दयानन्द ब्रह्मचर्य और सत्यविद्या के अभाव को ही भारतवर्ष की गिरावट का कारण समझते थे। काशी में तथा फर्रुखाबाद में, ऋषि ने पाठशालाएँ स्थापित की थीं, परन्तु प्रतीत होता है कि उस समय तक अभी आर्यजनता में इतनी जागृति पैदा नहीं हुई थी कि वह उस बोझ को उठाने के लिए उद्यत होती। अभी शिक्षणालयों का समय नहीं आया था। लोग अनुभव कर रहे थे कि जब तक क्स्वामी जी जीवित हैं तब तक आर्यसमाज में वेदज्ञ की न्यूनता नहीं कही जा सकती । स्वामी जी के जीवन का अन्त हो सकता है- आर्य पुरूषों के दिमाग में यह बात नहीं समाई थी। वे जानते थे कि आदित्य ब्रह्मचारी सौ साल से पहले नहीं मर सकता। उन्हें मालूम था कि संसार में ऐसे पुरुष भी वास करते हैं, जो

मनुष्य जाति के उपकारकों का प्राण संहार करने में सुख का अनुभव करते हैं।

ऐसी दशा में भी आर्यपुरुष यह अवश्य समझ रहे थे कि वैदिक ग्रन्थों की शिक्षा का प्रबन्ध करना पड़ेगा। 1882 और 1883 ई० के पूर्व भाग में पंजाब और पश्चिमोत्तर प्रदेश के आर्य समाचार-पत्रों में वैदिक शिक्षणालय की आवश्यकता पर लेख निकलते रहते थे। लाहौर के 'आर्य' नाम के अखबार में 1882 ई० के मई मास मे हम ऐंग्लो वैदिक स्कूल की आवश्यकता पर एक लेख पढ़ते हैं। 1882ई० मई मास में ऐंग्लो वैदिक स्कूल की चर्चा सिद्ध करती है कि दो बातें पहले से मानी जा चुकी थीं। एक ऐसे शिक्षणालय की आवश्यकता है जो वैदिक ग्रन्थों की शिक्षा दे सके, और वह शिक्षणालय ऐसा होना चाहिए कि जिसमें अंग्रेजी भाषा और पश्चिम की अर्वाचीन विद्याओं की शिक्षा का भी प्रबन्ध हो।

ऋषि की मृत्यु ने इन दो बातों के साथ एक तीसरी बात सम्मिलित कर दी कि यह शिक्षणालय ऋषि का स्मारक भी हो।..............................क्रमशः

आर्यसमाज मगरा–पूँजला के चुनाव सम्पन्न

आर्यसमाज मगरा–पूँजला के चुनाव २० मई २०१८ को साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् सम्पन्न हुए। समाज के प्रधान श्री सम्पतराज जी देवड़ा ने बताया कि सर्वसम्मति से हुए चुनाव के परिणामस्वरूप गठित नवीन कार्यकारिणी इस प्रकार हैः – संरक्षक श्री जयसिंह जी भाटी, प्रधान श्री सम्पतराज जी देवड़ा, उपप्रधानः श्री महेश जी गहलोत, मंत्री श्री प्रकाश जी सॉखला, उपमंत्री श्री हुकम सिंह जी सॉखला, कोषाध्यक्ष श्री हरिसिंह जी सॉखला, प्रचार मंत्री श्री शैलेन्द्र जी जांगिड़, पुस्तकालयाध्यक्ष श्री ब्रह्मसिंह जी आर्य बने। महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास हेतु श्री सम्पतराज जी देवड़ा तथा श्री विमल जी शास्त्री को नामित किया गया। अंतरंग सदस्य श्री भीकसिंह जी गहलोत, श्री प्रेमसिंह जी सॉखला, श्री अर्जुनसिंह जी गहलोत, श्री विमल जी शास्त्री तथा श्री हंसराज जी गहलोत निर्वाचित हुए।

अथ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका- तृतीय सुमन

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के प्रथम प्रकरण ''ईश्वर प्रार्थनाविषयः'' में ईश्वर प्रार्थना तथा वेदभाष्य रचने के उद्देश्य को स्पष्ट करने वाले स्वरचित आठ श्लोकों को अर्थसहित लिखने के बाद महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने यजुर्वेद के तीसवें अध्याय के तृतीय मन्त्र को लिखा है जो मन्त्र यह है-

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव।। यजु.३०।३।।

किसी भी वेद मन्त्र के साथ, वह वेद मन्त्र चाहे मूल संहिता मे देखा जाये अथवा ऋषि-मुनियों व प्रामाणिक आचार्यों के भाष्य में देखा जाये, चार महत्त्वपूर्ण तथ्य लिखे /जुड़े हुए मिलते है :-

१. ऋषिः, २.देवता , ३.छन्द , ४. स्वर।

मन्त्र के अर्थ, भाष्य तथा लोक में मन्त्र की चरितार्थता में इन चारों तथ्यों का अपना महत्त्व है। ''अपौरूषेयं वाक्यं वेदः'' के अनुसार भारतीय परम्परा वेद को ईश्वरीयवाणी मानती है। सृष्टि के आदिकाल में परमपिता परमात्मा ने चार ऋषियों के अन्तःकरण में वेदज्ञान को स्फुरित किया, प्रसारित किया। उन चार ऋषियों ने उसे वाणी और श्रुति की परम्परा से आगे बढ़ाया। बहुत लम्बे अन्तराल के बाद वह वेदज्ञान चार संहिताओं के रूप में ग्रन्थाकार में लिपिबद्ध होने के साथ ही जिस ऋषि ने उस मन्त्र के अर्थ को साक्षात् किया समझा तथा प्रचारित-प्रसारित किया, उस ऋषि का नाम मन्त्रार्थ द्रष्टा ऋषि के रूप में लिखा गया। मन्त्र का वर्ण्यविषय देवता के रूप में लिखा गया और जिस आवरण में आच्छादित करके = आबद्ध करके उसे लिपिबद्ध किया गया, लिखा गया उस आवरण का - छन्द का नाम भी उसके साथ लिखा गया साथ ही जिस स्वर में उस मन्त्र को उच्चरित किया, बोला अथवा गाया, उस स्वर का भी नाम मन्त्र के साथ लिखा गया।

इस मन्त्र का मन्त्रार्थद्रष्टा ऋषिः नारायण है। मन्त्र का देवता= वर्ण्यविषय यानि देवता सविता है। छन्द गायत्री है और स्वर षड्ज है। ये चार तथ्य हमें प्रत्येक मन्त्र के साथ लिखे मिलते हैं। यह मन्त्र मूल रूप में वेद में दो बार आया है ऋग्वेद में पाँचवे मण्डल के बयासीवें सूक्त का पाँचवा (५/८२/५) मन्त्र है तथा यजुर्वेद में तीसवें अध्याय का तीसरा मन्त्र है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने यजुर्वेद का पता देकर ही इसे उद्धृत किया है। महर्षि ने अपने सम्पूर्ण साहित्य में इस मन्त्र का लगभग नब्बे (९०) बार प्रयोग किया है क्योंकि ऋषिवर को यह मन्त्र अत्यधिक प्रिय है और प्रिय होने का कारण है कि महर्षि ने इस मन्त्र के अर्थ को पूर्ण रूपेण साक्षात् किया। इसीलिए वे अपने ही जीवन की नहीं, सम्पूर्ण संसार की समस्त बुराईयों को दूर करने का प्रयत्न आजीवन करते रहे। इस तथ्य को देखकर हमारा मन कहता है, कि जहाँ इसके प्रथम मन्त्रार्थ द्रष्टा ऋषिः नारायण हैं वहाँ इसका द्वितीय मन्त्रार्थद्रष्टा ऋषिः दयानन्द हैं, ऐसा लिख दें।

मन्त्र का वर्ण्यविषय = देवता सविता है। प्रसव ऐश्वर्य और अभिषव अर्थवाली सु धातु से तृच्

प्रत्यय करने पर सविता शब्द बनता है । इस प्रकार सब को उत्पन्न करने वाला, सब को प्रेरित करने वाला सबको समग्र ऐश्वर्य प्रदान करने वाला सविता है। वैदिक वाङ्मय में सविता को हिरण्यपाणिः, सुमेधाः,सत्यसवः, प्रसविता, देवानां प्रसविता कहा गया है। मन्त्र में मूल रूप से विश्व, देव, सविता, दुरित और भद्र पाँच संज्ञा पद हैं। यद् तद् और नः तीन सर्वनाम हैं तथा परासुव व आसुव दो क्रिया पद हैं। सविता का विशेषण है देव। विश्वानि पद दुरितानि का विशेषण है यत् तत् सापेक्ष सर्वनाम पद हैं नः सर्वनाम सम्बन्ध वाचक पद है। निरूक्त के अनुसार देने वाला देव होता है। चमकने चमकाने वाला देव होता है। प्रकाशित करने और होने वाला देव होता है। द्युस्थानी अर्थात् द्युलोक में रहने वाला देव होता है। क्रीड़ा, विजिगीषा, व्यवहार, द्युति, स्तुति, मोद, मद, स्वप्न, कान्ति और गति अर्थवाली दिव् धातु से अच प्रत्यय करने पर देव शब्द बनता है। दुः उपपद में रहते गति अर्थवाली इण् धातु से क्त प्रत्यय करने पर दुरित शब्द बनता है। दुःशब्द यहाँ दुर्गति का वाचक है इसीलिए निरूक्तकार दुरित शब्द का अर्थ करते हुए लिखते हैं दुरितानि = दुर्गतिगमनानि। दुर्गति को प्राप्त करने वाला, दुर्गति का कारणभूत, पापकर्म दुरित कहलाता है। प्रवेश अर्थवाली विश् धातु से क्वन् प्रत्यय करने पर विश्व शब्द बनता है। विश्व शब्द स्वतन्त्र संज्ञा पद होने पर जगत् = संसार का पर्याय है। सर्वादिगण में पठित होने से विश्वशब्द की सर्वनाम संज्ञा है। सर्वनाम होने पर यह विशेषण बनता है तब इसका अर्थ समग्र, सम्पूर्ण होता है जगत् या संसार नहीं। कल्याण अर्थवाली भदि**(भद)** धातु से रन् प्रत्यय होकर भद्र शब्द बनता है जिसका अर्थ है कल्याण अथवा कल्याणकारक। वैदिकवाङ्मय में अन्न, प्रजा, पशु,गृह, आशीः,श्री, आदि को भद्र कहा है क्योंकि इनकी प्राप्ति से व्यक्ति का भद्र= कल्याण = भला होता है। ऋग्वेद और यजुर्वेद के अनुसार वह सब भद्र है जिसको देव चाहते हैं, जिससे तृप्त होते हैं **विश्वं तद् भद्रं यदवन्ति देवाः।।**

मन्त्र का सविता देवता होने के कारण इसे सावित्री मन्त्र कहते हैं तथा छन्द गायत्री होने से इसे गायत्री मन्त्र कहते हैं। छन्दशास्त्र के नियमानुसार जिस मन्त्र में तीन चरण होते हैं तथा प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं उसे गायत्री छन्द वाला मन्त्र अथवा गायत्री मन्त्र कहा जाता है। जिस मन्त्र को हम सब गायत्री मन्त्र के नाम से जानते हैं उस मन्त्र का छन्द निचृद्गायत्री है, क्योंकि निचृद्गायत्री छन्द २३ (तेईस) अक्षरवाला होता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस मन्त्र का अर्थ इस प्रकार किया है।

भाष्यम् – हे सच्चिदानन्दानन्तस्वरूप ! हे परमकारूणिक ! हे अनन्त विद्य ! हे विद्याविज्ञानप्रद ! **(देव)** हे सूर्यादिसर्वजगद्विविद्याप्रकाशक ! हे सर्वानन्दप्रद ! **(सवितः)**हे सकलजगदुत्पादक ! **(नः)** अस्माकम् **(विश्वानि)** सर्वाणि **(दुरितानि)** दुःखानि सर्वान् दुष्टगुणांश्च **(परा सुव)**दूरे गमय। **(यद्भद्रम्)**यत् कल्याणं सर्वदुःखरहितं सत्यविद्या प्राप्त्याऽभ्युदय निःश्रेयससुखकरं भद्रमस्ति(तन्नः) अस्मभ्यम् **(आ सुव)** आ समन्ताद् उत्पादय कृपया प्रापय।

अस्मिन् वेदभाष्यकरणानुष्ठाने ये दुष्टा विघ्नास्तान् प्राप्तेः पूर्वमेव परासुव दूरं गमय। यच्च शरीर बुद्धिसहायकौशलसत्यविद्याप्रकाशादि भद्रमस्ति, तत् स्वकृपाकटाक्षेण हे परब्रह्मन्! नोऽस्मभ्यं प्रापय। भवत्कृपाकटाक्षसुसहायः प्राप्त्या सत्यविद्योज्जवलं प्रत्यक्षादिप्रमाणसिद्धं भवद् रचितानां वेदानां यथार्थं भाष्यं वयं विदधीमहि। तदिदं सर्वमनुष्योपकाराय भवत्कृपयाभवेत्। अस्मिन् वेदभाष्ये सर्वेषां मनुष्याणां परमश्रद्धयाऽत्यन्ता प्रीतिर्यथां स्यात्, तथैव भवता कार्यम् इत्योम्।

भाषार्थः – हे सत्यस्वरूप! हे विज्ञानमय! हे सदानन्दस्वरूप! हे अनन्तसामर्थ्ययुक्त! हे परमकृपालो! हे अनन्तविद्यामय! हे विज्ञानविद्याप्रद! **(देव)** हे परमेश्वर! आप सूर्यादि सब जगत् का और विद्या का प्रकाश करने वाले हैं, तथा सब आनन्दों के देने वाले हैं। **(सवितः)** हे सर्वजगदुत्पादक सर्व-शक्तिमन्! आप सब जगत् को उत्पन्न करने वाले हैं। **(नः)** हमारे **(विश्वानि)** सब जो **(दुरितानि)** दुःख है उनको, और हमारे सब दुष्टगुणों को कृपा से आप **(परासुव)** दूर कर दीजिए अर्थात् हमसे उनको और हमको उनसे सदा दूर रखिये। **(यद्भद्रम्)** और जो सब दुःखों से रहित कल्याण है, जो कि सब सुखों से युक्त भोग है, उसको हमारे लिए सब दिनों में प्राप्त कीजिए। सो सुख दो प्रकार का हे– एक, जो सत्यविद्या की प्राप्ति से अभ्युदय अर्थात् चक्रवर्ति राज्य, इष्ट, मित्र, धन, पुत्र, स्त्री और शरीर से अत्यन्त उत्तम सुख का होना, और दूसरा–जो निःश्रेयस सुख है कि जिसको मोक्ष कहते हैं और जिसमें ये दोनों सुख होते हैं, उसी को भद्र कहते हैं। **(तन्न आ सुव)** उस सुख को आप हमारे लिए सब प्रकार से प्राप्त करिये (अर्थात् कराइये)।

और आपकी कृपा के सहाय से सब विघ्न हमसे दूर रहें, कि जिससे इस वेदभाष्य के करने का हमारा अनुष्ठान सुख से पूरा हो। इस अनुष्ठान में हमारे शरीर में आरोग्य, बुद्धि, सज्जनों को सहाय, चतुरता और सत्यविद्या का प्रकाश सदा बढ़ता रहे। इस भद्रस्वरूप सुख को आप अपनी सामर्थ्य से ही हमको दीजिए। जिस कृपा के सामर्थ्य से हम लोग सत्यविद्या से युक्त जो आपके बनाये वेद हैं, उनके यथार्थ अर्थ से युक्त भाष्यका सुख से विधान करें। सो यह वेदभाष्य आपकी कृपा से सम्पूर्ण होके सब मनुष्यों का सदा उपकार करने वाला हो और आप अन्तर्यामी की प्रेरणा से सब मनुष्यों का इस वेद भाष्य में श्रद्धा सहित अत्यन्त उत्साह हो। जिससे वेदभाष्य करने में जो हम लोगों का प्रयत्न है, सो यथावत् सिद्धि को प्राप्त हो। इसी प्रकार से आप हमारे और सब जगत् के ऊपर कृपा दृष्टि करते रहे, जिससे इस बड़े सत्य काम को हम लोग सहज से सिद्धकरें।

संस्कारविधि में स्वामी जी ने इस मन्त्र का अर्थ इस प्रकार लिखा है– हे **(सवितः)** सकल जगत् के उत्पत्ति कर्त्ता, समग्र, ऐश्वर्ययुक्त, **(देव)** शुद्ध स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर ! आप कृपा करके **(नः)** हमारे **(विश्वानि)** सम्पूर्ण **(दुरितानि)** दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को **(परासुव)** दूर कर दीजिए।

(यत्) जो **(भद्रम्)** कल्याणकारक गुण-कर्म-स्वभाव और पदार्थ है **(तत्)** वह सब हमको **(आ सुव)** प्राप्त कीजिए।।

यजुर्वेदभाष्य करते हुए महर्षि ने इस मन्त्र का व्याख्यान इस प्रकार किया है।

पदार्थः- **(विश्वानि)** समग्राणि **(देव)** दिव्यगुण कर्मस्वभाव **(सवितः)** उत्तम गुणकर्मस्वभावेषु प्रेरक परमेश्वर ! **(दुरितानि)** दुष्टाचरणानि दुःखानि वा **(परा)** दूरार्थे **(सुव)** गमयं **(यत् भद्रम्)** भन्दनीयं धर्म्याचरणं सुखं वा **(तत् नः)** अस्मभ्यम् **(आ)** समन्तात् **(सुव)** जनय।

भाषार्थः- हे **(देव)** उत्तम गुण कर्म स्वभावयुक्त **(सवितः)** उत्तम गुणकर्मस्वभावों में प्रेरणा देने वाले परमेश्वर ! आप हमारे **(विश्वानि)** सब **(दुरितानि)** दुष्ट आचरण वा दुःखों को **(परासुव)** दूर कीजिए और **(यत्)** जो **(भद्रम्)** कल्याणकारी धर्मयुक्त आचरण वा सुख हैं **(तत्)** उस को **(नः)** हमारे लिए **(आ सुव)** अच्छे प्रकार उत्पन्न कीजिए।।

क्रमशः

माताजी शोभा जी का आशीर्वाद

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन में २० मई को आर्य वीर दल जोधपुर संभाग का आवासीय प्रशिक्षण शिविर आरंभ हुआ। इसी दिन जोधपुर की वयोवृद्ध आर्यसमाजी माताओं में से एक माता शोभा जी आसेरी धर्मपत्नी श्री मदनलाल जी आसेरी—जो अभी सुपुत्र के साथ दिल्ली विराजती है – का आगमन स्मृति भवन में हुआ।

माताजी शोभा जी ने स्मृति भवन में विभिन्न प्रकल्पों को देखा और वाटर कूलर, व्यायामशाला आदि के शेष कार्यों के लिए पाँच लाख रुपये महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास को प्रदान करने की घोषणा की । साथ ही एक लाख रुपयों का चैक आर्यसमाज महर्षि पाणिनिनगर, गोकुल जी की प्याऊ, मगरा पूँजला जोधपुर की यज्ञशाला के निर्माण हेतु प्रदान किया। आर्यसमाज महर्षि पाणिनिनगर के प्रधान श्री कैलाशचन्द्र आर्य को दूरभाष से सूचना दी गई। उन्होनें प्रसन्नता व्यक्त करते हुए माता शोभा जी आसेरी का कोटिशः धन्यवाद ज्ञापित किया।

माताजी ने यज्ञशाला में शिविरार्थी आर्यवीरों के साथ भी समय बिताया और उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया। आर्यसमाज को समर्पित ऐसी माता एवं उनके परिवार की समृद्ध एवं सुखद दीर्घायु की कामना आर्यजगत करता है।

"सरस्वती वाक् की गौरव महिमा"—२

– स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती, उत्तरकाशी

(इस लेख के पूर्व भाग में स्वामी वेदानन्द जी महाराज द्वारा वेद व शास्त्रीय उद्धरणों से कल्याणी, विज्ञान व ब्रह्मज्ञान प्रदायिनी, रहस्योद्घाटिनी, सत्कर्म और अमृतपद की प्रणेता सरस्वती वाक् की महिमा बताने के साथ साथ इसके चार रूपों. परा पश्न्यन्ती, मध्यमा और तीन वृत्तियों वाली वैखरी का व्याख्यान करते हुए शतपथ के उद्धरण से इसकी तुलना कामधेनु से की थी। पूर्व भाग के अंतिम अंश को पुनरुद्धृत करते हुए शेष भाग प्रस्तुत है – सं0)

शत्पथ ब्राह्मण का वचन हैः – **वाक् वै सररस्वती । वाक् वै कामधेनु ।।** अर्थात् – इस दैवी वाक् को ही सरस्वती कहा जाता है। यह वाणी ही कामधेनु है। जैसे कामधेनु गौ से इच्छानुसार दूध की प्राप्ति होती है, वैसे ही वाणी के सदुपयोग करने वाले व्यक्ति के सब मनोरथ पूरे हो जाते हैं। वाक् रूपी गौ के भी चार स्तन होते हैं, जिनके नाम है –

१. स्वाहाकार २. वषट्कार ३. स्वधाकार और ४. हन्तकार।

स्वाहाकार और वषट्कार इन दो स्तनों का ज्ञानरस देवपुरुष ही प्रयोग करते हैं। स्वधाकार स्तन का रस पितृजनों के लिए होता है तथा हन्तकार स्तन का रस सामान्य मानव समाज प्रयोग करता है। इनकी व्याख्या हम नीचे लिखते हैं : –

१. स्वाहाकार : – सद्ज्ञान का प्रवचन, उपदेश और अध्यापन द्वारा वेदों का प्रचार प्रसार करना देवपुरुषों का कर्तव्य होता है। इन्हीं साधनों के द्वारा ज्ञान का प्रकाश होता है। जगत में ज्ञान का प्रकाशदीप जलाए रखने के लिए देवगण सदा प्रयत्नशील रहते हैं। इसके विपरीत असुर लोग ज्ञानदीप को सहन नहीं कर पाते। वे अज्ञान अंधकार में ही जीवन जीते हैं। अपने क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति के लिए वे छल, कपट, असत्य वाणी का प्रयोग करते हैं।

जिनकी वाणी में सदा सत्य की ही रस धारा बहती है वे वाक् रूपी गौ के प्रथम स्तन का ही रसपान करते हैं। सत्य ही धर्म है। सत्य का उपदेश धर्म का ही उपदेश है। धर्म सब सुखों का मूल है। उस धर्म का पालन करने वाले देवगण सदा सुख संपन्न ही होते हैं।

२. **वषट्कार** : – वेद में देवों को हवि प्रदान करने के लिए "वौषट्" शब्द का प्रयोग मिलता है। वौषट् शब्द में वह– धातु है और डौशट् प्रत्यय होता है। वौषट् का अर्थ होता है – हविष्य द्रव्य का समर्पण। वेदवाणी को क्रियात्मक रूप देना ही वशट्कार है। किसी पूज्य व्यक्ति को भोजन का निमंत्रण देना **स्वाहाकार है**। फिर उन्हें भोजन प्रस्तुत करना **वषट्कार है।** उत्तम श्रेणी के व्यक्ति की कथनी और करनी में एकरूपता होती है। वह जो कहते हैं वैसा ही कर्म करना है। वेदवाणी के अनुसार जीवन जीना ही उस वेदवाक् रूपी गौ के दूसरे स्तन का पान करना है। ऐसे लोगों की सभी मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। ब्रह्माग्नि में आत्मा की आहुति प्रदान करना वशट्कार का उत्तमोत्तम रूप है। संध्या और वेद–स्वाध्याय ये दोनों ही ब्रह्मयज्ञ के अंगरूप हैं। शत्पथ ब्राह्मण में **ब्रह्मयज्ञ के चार वषट्कार बतलाए हैं। १. वायु का तीव्र गति से बहना २. विद्युत का चमकना ३. बादल का गर्जना तथा ४. बिजली का कड़कना। इन चारों अवसरों पर ब्रह्म के ध्यान में निमग्न हो जाना चाहिए। उससे मृत्यु का अतिक्रमण होकर**

उसे ब्रह्म का ही सामीप्य प्राप्त होता है।

३. <u>**स्वधाकारः**</u> – निरुक्त में "स्वधा" शब्द को अन्न नामों में पढ़ा गया है। **"अन्नं वै प्राणः"** अर्थात् – अन्न ही जीवनदाता है। जो व्यक्ति अन्न का उत्पादन करते हैं, वे मानो जगत को जीवन प्रदान करते हैं। जीवनोपयोगी अन्न फल आदि पदार्थों का उत्पादन करके उन्हें प्राणी मात्र की सेवा में लगाना ही स्वधाकार है। यह पितृजनों का कार्य होता है। अकेले ज्ञानमात्र से पेट नहीं भरता। पेट भरने के लिए तो भोजन चाहिए। "भूखे भजन न होय गोपाला,, यह लो अपनी कंठी माला।" यह एक कहावत है। भूखा–प्यासा व्यक्ति ईश्वर भक्ति भी नहीं कर पाता। भूखे व्यक्ति को ज्ञान, दर्शन की बातें भी नहीं सुहाती। इस जीवन के अस्तित्व की रक्षा के लिए भोजन प्रथम स्थान पर आता है। जो लोग जीवन के अस्तित्व की रक्षा के लिए भोजन की व्यवस्था करते हैं, वे मानों वेदवाक् रूपी गौ के तीसरे स्तन का रसपान करते हैं। ऐसे अन्नदाता के अन्नभंडार सदा भरे रहते हैं। जो अन्नादि के दान में पणता वर्तते हैं, उनके विशाल भंडार भी खाली हो जाते हैं। ऐसे लोग दाने–दाने के मोहताज हो जाते हैं।

४. **हंतकार** : – वाक् रूपी गौ का चौथा स्तन हंतकार नाम से जाना जाता है। **"लूटो खाओ मौज करो। मारपीट कर भोग करो"** यह भाषा आसुरी प्रवृत्ति के लोगों से सुनने में आती है। ऐसी आसुरी प्रवृत्ति के लोग वाणी का भी रक्तपान ही कर रहे हैं। यह मार काट की भाषा अज्ञानी असुर लोगों की ही होती है। जीवन भर उन्हें वाणी के अमृत रस का पान करने का कभी कोई अवसर ही नहीं मिलता। ऐसे लोग वाणी के उस सार को जान ही नहीं पाते। उनकी सृष्टि स्थूल पदार्थों तक ही परिसीमित रहती है। उन्हीं के संचय में अपना सारा अनमोल जीवन नष्ट कर देते हैं। **अंततः दुनिया के ये भौतिक पदार्थ यहीं धरे रह जाते हैं और वे खाली हाथ इस संसार से प्रस्थान करते हैं। ऐसे अज्ञानी लोग वाणी के चतुर्थ स्तन हंतकार के रसपान में ही अपना सारा जीवन व्यतीत कर देते हैं।** उन्हें वाणी के अमृतरसपान का स्वप्न में भी कभी आभास नहीं होता। **वेदज्ञान से भटके हुए लोग इसी श्रेणी में ही आते हैं।**

वेदवाणी का स्वाध्याय व्यक्ति को देवता बना देता है। ऐसे **देवता श्रेणी के व्यक्तियों को ही वेदवाक् रूपी गाय के स्वाहाकार और वषट्कार स्तनों के रसपान का अवसर मिलता है। वे लोग सौभाग्यशाली हैं जिन्हें इस अमृत रस पान करने का अवसर प्राप्त होता है। और इसी में मानव जीवन की सफलता है।**

जो व्यक्ति अपने मानव जीवन की सफलता की कामना करते हैं, उन्हें नित्यप्रति वेद का स्वाध्याय करना चाहिए तथा **नित्य प्रति श्रद्धा भक्ति के साथ उस ईश्वर की उपासना करनी चाहिए**, जो अमर फल दाता है। उस **ईश्वर की आज्ञानुसार ही जीवन जीना चाहिए।** इसी में सरस्वती का गौरव है, जो आत्मा को ब्रह्म से मिला देती है। सांख्य, योग और वेदांत दर्शनों का स्वाध्याय भी उस ब्रह्मसे मिलने की प्रेरणा प्रदान करता है। इसी हेतु हमने **"वेदान्तसार"** पुस्तक का लेखन किया है, जो साधकों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

आर्यवीरदल जोधपुर का संभागीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास के तत्वावधान में आर्य वीर दल जोधपुर का संभागीय प्रशिक्षण शिविर २० मई २०१८ से २६ मई २०१८ तक आयोजित किया गया। शिविर में ६१ आर्य वीरों ने भाग लिया। न्यास के मंत्री आर्य किशनलालजी, कोषाध्यक्ष श्री जयसिंहजी पालड़ी एवं वयोवृद्ध आर्यसमाजी श्री नृसिंहजी सूरसागर द्वारा २०मई को ध्वजारोहण के साथ शिविर का शुभारंभ हुआ। न्यास व आर्यसमाज के सदसयों व अभिभावकों की उपस्थिति मे ध्वजारोहण समारोह का संचालन आर्यवीरदल जोधपुर के संचालक डॉ महेश परिहार ने किया।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के राजस्थान के मुख्य शिक्षक श्री भागचंदजी के साथ शिक्षकत्रय श्री जीवन लालजी, श्री दिनेशजी और श्री घनश्यामजी ने जहाँ सार्वदेशिक आर्य वीर दल के पाठ्यक्रम अनुसार आर्य वीरों को शिक्षित किया; वही लंबे समय से जोधपुर के आर्य जगत से जुड़े और विभिन्न शाखाओं में कराटे का प्रशिक्षण दे चुके निष्णात कराटे प्रशिक्षक श्री मंगल सिंह जी, महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन में ४0 वर्ष तक मुख्यतः बॉक्सिंग के माध्यम से आर्य वीर दल को अपनी सेवाएं देने वाले भाईसाहब श्री जगदीश प्रसाद जी आर्य एवं आर्य वीर दल की अभिमन्यु शाखा, बागर को दशकों तक संभालने वाले, राजस्थान में एवं बाहर के आर्यवीरदल के शिविरों में प्रशिक्षण दे चुके एवं आज भी पारिवारिक यज्ञों का अभियान चला रहे भ्राता श्री कुलदीप सिंह शोभावत ने भी क्रमशः बॉक्सि, कराटे और लाठी मे आर्य वीरों को शिक्षित किया।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल के चारों शिक्षकों ने अपनी पूर्णकालिक आवासीय सेवाएं दी, जिसके कारण स्थानीय शिक्षकवृंद अपने पारिवारिक, कार्यालयीन व सामाजिक दिनचर्या को निभाते हुए अपने सुनिश्चित शिक्षण समय में यहां अपनी सेवाएं दे सके।

इस शिविर में ८ वर्ष से लेकर २३ वर्ष तक के आर्यवीर सम्मिलित हुए। प्रशिक्षकों ने इनके मानसिक, भारीरिक और बौद्धिक स्तर में सामंजस्य बिठाते हुए कुशलता से प्रातः चार बजे से रात्रि दस बजे तक प्रशिक्षण दिया। सच तो यह है कि ये आर्यवीर और शिक्षक दस बजे के बाद भी थकते नहीं थे। अपनी नींद में अत्यधिक कमी कर निरंतर गहन प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले ये आर्यवीर आर्य समाज रूपी शरीर का खून है।

इस शिविर में आर्य वीरों को सूबेदार मेजर कुलश्रेष्ठ के देखरेख में सिक्स्थ राज इन्फैंट्री बटालियन तथा ४ राज एयर स्क्वॉड्रन एनसीसी के प्रशिक्षकों ने शिविर स्थल पर हथियारों एवं विमान मॉडलों के साथ आकर यह प्रशिक्षण प्रदान किया। आर्मी के प्रशिक्षकों द्वारा एसएलआर एवं इंसास राइफलों की सामान्य जानकारी, इन को खोलना, पुनः जोड़ना और निशाना लेने का प्रशिक्षण दिया। तो एयर विंग के प्रशिक्षक ने विभिन्न वायुसेना के विभिन्न लड़ाकू एवं परिवहन विमान और हेलीकॉप्टरों की क्रिया विधि बताई एवं उनका सामान्य परिचय दिया।

शिविर में आर्य वीरों को यज्ञोपवीत जोधपुर के आधे विद्वान डॉक्टर राम नारायण जी शास्त्री द्वारा प्रदान की गई, जिन्होंने यज्ञोपवीत देने से पहले इसका महत्व और रहस्य बताया। शारीरिक, आत्मिक एवं मानसिक उन्नति सुनिश्चित करने हेतु सर्वांग सुन्दर व्यायाम, योगासन,

लाठी, तलवार, भाला, धारदार एवं आग्नेय अस्त्रों से बचाव अर्थात आत्मरक्षा, कराटे, बॉक्सिंग, ड्रिल, परेड, सैन्य शिक्षण, संध्या, हवन, नैतिक शिक्षण आदि प्राप्त कर २६ मई २०१८ की सायं आर्य वीरों ने विभिन्न कौशलों का नयनाभिराम प्रदर्शन किया जिसका उपस्थित अभिभावकों एवं दर्शकों ने करतल ध्वनि से अभिनंदन किया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्री रामस्वरूप जी टाक एवं विशिष्ट अतिथि आर्य वीर दल राजस्थान के उप संचालक श्री देवेंद्र जी शास्त्री थे। सभी आर्य वीरों को प्रमाण पत्र, स्मृति चिन्ह व सत्यार्थ प्रकाश वितरित की गई। शिविर के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। मुख्य अतिथि द्वारा ध्वजावतरण से समाप्त कार्यक्रम के अंत में आर्य वीरों द्वारा बनाई गई आर्य वीरों की रेलगाड़ी ने सभी अभिभावकों उपस्थित आर्य जनों न्यास के सदस्यों का मन मोह लिया। बीच बीच में मुख्य अतिथि व न्यास मंत्री ने संबोधित किया। न्यासी कमल किशोर कार्य ने शिविर का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। शिविर के संयोजक श्री महेश परिहार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। समापन समारोह का कुशल संचालन श्री शिवराम आर्य ने किया। समापन समारोह के बाद आर्यों ने ऋषि लंगर का आनंद लिया।

आर्य वीरांगना दल का प्रान्तय प्रशिक्षण शिविर जारी

महर्षि दयानंद सरस्वती स्मृति भवन न्यास के तत्वावधान में आर्य वीरांगना दल का प्रान्तय प्रशिक्षण शिविर ४ जून २०१८ से १० जून २०१८ तक आयोजित किया गया है। किशोर न्याय बोर्ड की सदस्या, इस न्यास की न्यासी एवं आर्य वीरांगना दल, राजस्थान की संचालिका श्रीमती रूपवती देवड़ा के कुशल संयोजन में ध्वजारोहण के साथ आरम्भ हुए इस शिविर में बालिकाओं के शारीरिक, आत्मिक और मानसिक विकास हेतु सार्वदेशिक आर्य वीर दल और वीरांगना दल के कुशल प्रशिक्षकों के साथ पतंजलि योग पीठ एवं स्थानीय योग्य शिक्षकों की छत्रछाया में सर्वांग सुन्दर व्यायाम, योगासन, लाठी, तलवार, भाला, धारदार एवं आग्नेय अस्त्रों से बचाव अर्थात आत्मरक्षा, कराटे, बॉक्सिंग, ड्रिल, परेड, सैन्य शिक्षण, संध्या, हवन, नैतिक शिक्षण के साथ साथ १६० से भी अधिक बालिकाओं की सुरक्षा की चाक चौबन्द व्यवस्था न्यास, पुलिस व प्रशासन के साथ मिलकर की गई है।

लेखकों से निवेदन

इस पत्रिका का उद्देश्य महर्षि मिशन को प्रचारित-प्रसारित करना हैं। आर्य जगत के चिंतकों और लेखकों से निवेदन है कि ऋषि मिशन की पूर्ति में सहयोग हेतु अपनी रचनाओं को प्रकाशनार्थ भिजवाएं। रचनाएँ महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास के पते पर या sampadakmdsprakash@gmail.com **के पते पर ईमेल से भी भेजी जा सकती हैं।**

—संपादक

यज्ञशाला का कार्य पूर्णता की ओर

गोकुलजी की प्याऊ स्थित आर्य समाज मन्दिर, महर्षि पाणिनिनगर, पूंजला, जोधपुर में पवित्र वैदिक संस्कृति की प्रतीक विराट् यज्ञशाला का कार्य प्रगति पर चल रहा है। समाज के प्रधान कैलाश चन्द्र आर्य ने बताया कि यज्ञशाला के निर्माण का कार्य आर्य किशनलाल गहलोत, मंत्री, महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास की देखरेख मे चल रहा है। इस पुनीत कार्य के लिये भामाशाहों का सहयोग व मार्गदर्शन मिल रहा है। 28 गुणा 28 फुट की यज्ञशाला पहाड़ की तलीहटी पर ज़ोधपुर के छीतर पत्थर से बनाई जा रही है। ऑखों को लुभावनी एवं मन व आत्मा में शान्ति शोभायामान करती यज्ञशाला जन सहयोग से बन रही है। इसी वर्ष गणमान्य लोगों व विद्वानों की उपस्थिति में यज्ञशाला का भव्य लोकार्पण कार्यक्रम आयोजित होगा। सभी आर्यजन इस पवित्र यज्ञशाला के निर्माण हेतु तन–मन–धन समर्पित कर पुण्य के भागी बनें।

नाडी की सफाई की, मछलियों को दिया जीवन दान!

गोकुलजी की प्याऊ स्थित आर्य समाज मन्दिर, महर्षि पाणिनिनगर, पूंजला, जोधपुर के सदस्यों व आर्य वीरों ने स्थानीय रामतलाई नाडी की स्वच्छता का कार्य वेद मंत्रों के गायन के साथ आरम्भ किया। प्रधान कैलाश चन्द्र आर्य ने बताया कि छोटे के कुन्ड मे कम पानी के कारण मछलियों का जीवन संकट में आ गया । लगभम 250 मछलियों को आर्य वीरों ने परिश्रम करके रामतलाई नाडी के जलाशय में डाला। इस कार्य में बहुत परिश्रम करना पड़ा। इस पुनीत कार्य में आर्य वीर दल, जोधपुर के संचालक डॉ. महेश परिहार, बलवीर भाटी, सुरेन्द्र परिहार, दीपू सांखला, अशोक सांखला, नरेन्द्र आर्य, सोहन सिंह, संतोष आर्या, उषा भाटी, अनुज गहलोत, भगवान, मनोहर, देवीलाल, अशोक आदि के साथ साथ क्षेत्रवासियों ने भी सहयोग दिया।

मई 1883) के 135 वें वर्ष की स्मृति में
पंच महायज्ञ व उनका प्रयोजन
आर्य समाज महामन्दिर
(पावटा सी रोड)
आपका
हार्दिक स्वागत करता है।

Postal Reg. Jodhpur/434/2018-20

Date Of Posting 9,10-6-2018
Date Of Print 5-6-2018

जिनका राज्यभिषेक दिवस इसी माह आता है छत्रपति शिवाजी का अफजलखॉं को सीख, क्रूर जहांगीर द्वारा धर्मगुरू तेगबहादुर को गर्म तवे पर बिठाकर गर्म रेत डालना १६ जून, मर्दानी महारानी झासी का शहीद दिवस १८ जून

...धिकारी महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्य... प्रकाशक व मुद्रक विजयसिंह भाटी द्वारा महर्षि दय... स्वती स्मृति भवन न्यास, महर्षि दयानन्द मार्ग, मौह... पुलिया... पास जोधपुर (राज.) से प्रकाशित एवं सैनि... णा मौहल्ला केरू हाऊस जोधपुर फोन नं. 982... से मुद्रित।

सम्पादक फोन नं. 9460649055

Book-Post